हिंदी

अध्यापक मार्गदर्शिका

2018

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
तेलंगाणा, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

आमुख

रटकर जो न सीख सका मैं, अनुभव करके सीखा है।

कुछ अपनों से कुछ दूजों से, गिरते उठते सीखा है।। - 'साही'

सीखने पर बल देने वाली उपर्युक्त पंक्तियों से यह पता चलता है कि सीखना रटने का नाम नहीं है। बल्कि अनुभवों से तर्क करके सीखने का नाम है। वास्तव में सीखना जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। यही कारण है कि शिक्षा के कई माध्यमों में पाठ्य-पुस्तक जो एक है, का उद्देश्य बच्चों को सीखने के पर्याप्त अवसर देना है। तेलंगाणा राज्य की हिंदी पाठ्य-पुस्तकों में 'सीखने के अवसरों' से बच्चों को लाभान्वित करने के लिए राज्य के हिंदी अध्यापकों के लिए 'हिंदी अध्यापक मार्गदर्शिका' का निर्माण किया गया है। इसमें विभिन्न विषयों से संबंधित अध्याय दिये गये हैं। जैसे कि सर्वविदित है कि हमारी पाठ्यपुस्तकों का मुख्य आधार 'सीखने की संप्राप्तियाँ' हैं। सीखने की संप्राप्तियों के अर्जन पर ही शिक्षण और अधिगम की सफलता निर्भर रहती है। समूचे देश में आयोजित राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण में भी सीखने की संप्राप्तियों के आधार पर ही परीक्षा का आयोजन किया गया था। इस परीक्षा के पश्चात् घोषित परिणामों पर दृष्टिपात करने पर सीखने की संप्राप्तियों और उसके अर्जन के लिए उचित व्यूहों या पद्धतियों की आवश्यकता का अनुभव किया गया। इसी कारण इस मार्गदर्शिका में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के अवलोकन से संबंधित अध्याय दिया गया है। इस अध्याय से आधुनिक भारतीय भाषाओं के अंतर्गत हिंदी में तेलंगाणा राज्य के छात्रों की स्थिति का पता चलता है। सीखने की संप्राप्तियों की आवश्यकता, स्वरूप, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा आवश्यक व्यूहों का सविस्तार वर्णन संबंधी अध्याय भी दिया गया है। इस अध्याय द्वारा अध्यापक कक्षा-कक्ष में विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण के समय आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा कर सकेंगे। रचनात्मक आकलन के समय आने वाली विभिन्न समस्याओं के निवारण हेतु इस आकलन से संबंधित विभिन्न अंगों का एक स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया गया है। सारांशात्मक आकलन से संबंधित भार तालिकाएँ भी दी गयी हैं।

वर्तमान समय में 'बाल सुरक्षा' एक महत्वपूर्ण विषय है। एक अध्यापक को बालकों की सुरक्षा से संबंधित विभिन्न नियमों की जानकारी होना आवश्यक है। इसीलिए बाल सुरक्षा (पॉक्सो अधिनियम) से संबंधित जानकारी भी इस मार्गदर्शिका में दी गयी है।

पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु च यद्धनम्।

उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्।।

उपर्युक्त श्लोक से यह पता चलता है कि पुस्तक का ज्ञान यदि पुस्तक तक और अपना धन हाथ से निकल जाए तो दोनों किसी काम के नहीं। अर्थात् इस मार्गदर्शिका में बताये गये अंशों को इस पुस्तक तक सीमित नहीं रखना है। बल्कि मार्गदर्शिका के अंशों की सफलता कक्षा-कक्ष में इनके कार्यान्वयन पर निर्भर करती है। आशा है यह मार्गदर्शिका तेलंगाणा राज्य के हिंदी अध्यापकों के लिए सहायक सिद्ध होगी।

निदेशक

एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

हिंदी अध्यापक मार्गदर्शिका

सहभागी गण – राज्य हिंदी संसाधक

श्रीमती जी. किरण, हैदराबाद

डॉ. राजीव कुमार सिंह, मेड्चल

डॉ. सय्यद एम. एम. वजाहत, हैदराबाद

मोहम्मद उसमान, करीमनगर

श्री वै. विनायक, आदिलाबाद

श्रीमती एस. चंदना, गज्वेल

श्रीमती कविता, हैदराबाद

श्री सुरेश कुमार मिश्रा, रंगारेड्डी

सुश्री ऋतु भसीन, मेड्चल

श्री के. शिवराजन, बोधन

मोहम्मद शरीफ, करीमनगर

श्रीमती जे. कृष्णा नागमणि,
एस.सी. ई. आर. टी., हैदराबाद

सलाहकार, समन्वयक गण

डॉ. पी. रेवती रेड्डी,
एस. सी. ई. आर. टी.,
हैदराबाद

डॉ. एम. रमादेवी,
समन्वयक (भाषाएँ)
एस. सी. ई. आर. टी.,
हैदराबाद

डॉ. गौसिया बेगम,
समन्वयक (हिंदी)
एस. सी. ई. आर. टी.,
हैदराबाद

प्रधान सलाहकार

श्रीमती बी. शेषु कुमारी,
निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी.,
हैदराबाद

श्री टी. विजय कुमार,
निदेशक, पाठशाला शिक्षा
हैदराबाद

डी. टी. पी. कार्य

श्री सुरेश कुमार मिश्रा, रंगारेड्डी

SCERT TELANGANA

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की समय–सारिणी

दिन	कालांश – I (9.30-11.15)	अल्प विराम (11.15-11.30)	कालांश – II (11.30-1.00)	भोजन विराम (1.00-2.00)	कालांश – III (2.00-3.30)	अल्प विराम (3.30-3.45)	कालांश – IV (3.45-5.00)
1	पूर्व परीक्षा – परिचय		सीखने की संप्राप्तियाँ – परिचय		सीखने की संप्राप्तियाँ (कक्षा 6-8)		सीखने की संप्राप्तियाँ (कक्षा 9&10)
2	सीखने की संप्राप्तियाँ (सुनो-बोलो) प्रस्तुतीकरण		सीखने की संप्राप्तियाँ (पढ़ो) प्रस्तुतीकरण		सीखने की संप्राप्तियाँ (लिखना) प्रस्तुतीकरण		सीखने की संप्राप्तियाँ (सृजनात्मक अभिव्यक्ति) प्रस्तुतीकरण
3	सीखने की संप्राप्तियाँ (शब्द भंडार) प्रस्तुतीकरण		सीखने की संप्राप्तियाँ (भाषा की बात) प्रस्तुतीकरण		सीखने की संप्राप्तियाँ (प्रशंसा) प्रस्तुतीकरण		समस्या – समाधान
4	समस्या – समाधान		रचनात्मक आकलन (पुस्तक समीक्षा तथा लिखित कार्य)		रचनात्मक आकलन (परियोजना कार्य तथा लघु परीक्षा)		प्रश्न पत्र निर्माण भार तालिका
5	प्रश्न पत्र निर्माण प्रस्तुतीकरण		विशेष मुद्दे		विशेष मुद्दे		पूरक परीक्षा

SCERT TELANGANA

विषय-सूची

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	**राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण एक अवलोकन**	1 - 6
2.	**सीखने की संप्राप्तियाँ (कक्षा 6 से 10 तक)**	7 - 34
3.	**सीखने की संप्राप्तियों का स्वरूप – शिक्षण व्यूह**	35 - 55
4.	**विषयपरक समस्या – समाधान**	56 - 71
5.	**रचनात्मक आकलन – सारांशात्मक आकलन**	72 - 83
6.	**विशेष मुद्दे**	84 - 99

SCERT TELANGANA

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण

एक

अवलोकन

SCERT TELANGANA

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण – एक अवलोकन

NAS क्या है?

– यह एक राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाने वाला सर्वेक्षण है। इसका पूर्ण रूप है- NAS - National Achievement Survey. इसे ही हिंदी में राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण कहते हैं।

उद्देश्य क्या है?

– इसका उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर तीसरी, पाँचवीं, आठवीं और दसवीं स्तर पर सीखने की संप्राप्तियों की जाँच करना है।

किन कक्षाओं के लिए आयोजित की जाती है?

यह कक्षा तीन, पाँच. आठ और दस के लिए आयोजित की जाती है। पिछले वर्ष 13 नवंबर 2017 को यह सर्वेक्षण परीक्षा आयोजित की गयी।

किन विषयों में आयोजित किया जाता है?

इसका आयोजन इस तरह होता है-

कक्षा तीन : परिसर विज्ञान, आधुनिक भारतीय भाषा, गणित

कक्षा पाँच : परिसर विज्ञान, आधुनिक भारतीय भाषा, गणित

कक्षा आठ : भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, अंग्रेजी

कक्षा दस : भाषा (पठन अर्थग्राह्यता के लिए), गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, अंग्रेजी

कक्षा	कुल		प्रतिशतवार छात्र उपलब्धि				लिंगवार				पाठशाला की स्थिति				पाठशाला प्रबंधन				सामाजिक समुदाय							
	राज्य	राष्ट्र	30%	30-50%	50-75%	75%<	राज्य		राष्ट्र		राज्य		राष्ट्र		राज्य		राष्ट्र		राज्य				राष्ट्र			
							B	G	B	G	या	न	या	न	सर..	सहा.	सर.	सहा.	SC	ST	OBC	GEN	SC	ST	OBC	GEN
3	68	68	7.2	16.7	34.1	42	67	68	67	68	68	68	68	67	65	68	68	67	69	63	68	70	67	88	68	69
5	57	58	13.8	26.2	37.1	22.8	56	57	58	59	57	58	58	59	57	55	58	60	55	50	57	60	57	55	60	60
8	53	57	17	28.7	39	15.4	52	53	58	57	52	54	57	58	52	59	56	59	52	48	54	54	56	53	59	58
10	51.68		19.73	27.20	40.54	10.34																				

SCERT TELANGANA

कक्षावार और विषयवार छात्र उपलब्धि का विवरण

- तीसरी कक्षा में 30% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 7.2% है, 30% से 50% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 16.7% है और 50% से 75% प्राप्त करने वाले 34.1% है तथा 75% से अधिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले 42% है।

- पाँचवीं कक्षा में 30% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 13.8% है, 30% से 50% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 26.2% है और 50% से 75% प्राप्त करने वाले 37.1% है तथा 75% से अधिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले 22.8% है।

- आठवीं कक्षा में 30% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 17.0% है, 30% से 50% उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 28.7% है और 50% से 75% प्राप्त करने वाले 39.0% है तथा 75% से अधिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले 15.4% है।
- पाठशाला आने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

बच्चों के विचार (पाठशाला के प्रति)

- तीसरी कक्षा के 95%, पाँचवीं और आठवीं के 96% बच्चे पाठशाला आना पसंद करते हैं।
- तीसरी कक्षा के 31%, पाँचवीं 28% और आठवीं के 35% बच्चे पाठशाला आने में कठिनाई अनुभव करते हैं।
- तीसरी कक्षा के 85%, पाँचवीं 88% और आठवीं के 89% बच्चे कक्षा-कक्ष में अध्यापक की बात समझ सकते हैं।
- तीसरी कक्षा के 67%, पाँचवीं 65% और आठवीं के 57% बच्चे घर पर और पाठशाला में अध्यापक द्वारा एक ही भाषा का उपयोग करते हैं।
- तीसरी कक्षा के 86%, पाँचवीं 87% और आठवीं के 82% बच्चे खेल कालांश में खेलते हैं।

अध्यापक प्रतिक्रिया

- तीसरी कक्षा के 57%, पाँचवीं 61% और आठवीं के 90% अध्यापक उच्च शिक्षा में पठित विषयों को पढ़ाते हैं।
- 72% अध्यापक पाठ्यक्रम के लक्ष्य समझते हैं।
- 86% अध्यापकों के पास पर्याप्त शिक्षण सामग्री है।
- 24% अध्यापकों की राय में कार्यभार अधिक है।
- 62% अध्यापक अपने व्यवसाय से अत्यधिक संतुष्ट हैं।
- 83% अध्यापकों के पास कार्य क्षेत्र पर्याप्त है।
- 26% अध्यापकों की राय में पाठशाला इमारत की मरम्मत की आवश्यकता है।

SCERT TELANGANA

- 21% अध्यापकों की राय में पेयजल आपूर्ति की कमी है।
- 19% अध्यापकों की राय में पर्याप्त शौचालय की सुविधा नहीं है।
- 10% अध्यापकों की राय में बिजली की सुविधा नहीं है।

कक्षा-कक्ष में अध्यापक बच्चों का आकलन कैसे करते हैं? (प्रतिशत में)

	कभी नहीं	कुछ पाठों के लिए	लगभग सभी पाठों के लिए
मौखिक परीक्षा	4	17	79
लिखित परीक्षा	1	30	69
बहुविकल्पीय परीक्षा	3	31	67
अवलोकन	1	16	83
गृहकार्य	2	18	80
छात्र स्व आकलन	4	34	62
परियोजना कार्य	2	54	44
छात्र आकलन	7	56	37
पोर्टफोलियो	18	55	28

अभिभावकों की भागीदारी के बारे में अध्यापक क्या कहते हैं?

बच्चों की उपलब्धियों में अभिभावकों की भागीदारी

अध्यापकों ने यह प्रतिक्रिया दी है कि

- 11% बच्चों की उपलब्धियों में अभिभावकों की भागीदारी उच्च है।
- 47% बच्चों की उपलब्धियों में अभिभावकों की भागीदारी मध्यम है।
- 42% बच्चों की उपलब्धियों में अभिभावकों की भागीदारी निम्न है।

बच्चों की पाठशाला गतिविधियों में अभिभावकों की भागीदारी

अध्यापकों ने यह प्रतिक्रिया दी है कि

- 8% बच्चों की पाठशाला गतिविधियों में अभिभावकों की भागीदारी उच्च है।
- 37% बच्चों की पाठशाला गतिविधियों में अभिभावकों की भागीदारी मध्यम है।
- 55% बच्चों की पाठशाला गतिविधियों में अभिभावकों की भागीदारी निम्न है।

प्रधानाध्यापक की प्रतिक्रिया क्या है?

सुविधाओं की कमी या अपर्याप्तता का पाठशाला की गतिविधियों पर प्रभाव

प्रधान अध्यापकों ने यह प्रतिक्रिया दी है कि

SCERT TELANGANA

- 50% शिक्षण सामग्रियों की कमी है।
- 51% शिक्षण कर्मचारियों की कमी है।
- 81% योग्य शिक्षण कर्मचारियों की अपर्याप्तता है।
- 46% सहायक कर्मचारियों की कमी है।
- 63% योग्य सहायक कर्मचारियों की कमी या अपर्याप्तता है।
- 31% शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री की कमी है।
- 32% पुस्तकालय में विषयगत शिक्षण सामग्री स्त्रोतों की कमी है।
- 42% छात्रों में अनुशासन की कमी है।

प्रधान अध्यापकों ने यह प्रतिक्रिया दी है कि
- 30% शिक्षण सामग्रियों की आंशिक कमी है।
- 38% शिक्षण कर्मचारियों की आंशिक कमी है।
- 11% योग्य शिक्षण कर्मचारियों की आंशिक अपर्याप्तता है।
- 34% सहायक कर्मचारियों की आंशिक कमी है।
- 22% योग्य सहायक कर्मचारियों की आंशिक कमी या अपर्याप्तता है।
- 49% शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री की आंशिक कमी है।
- 53% पुस्तकालय में विषयगत शिक्षण सामग्री स्त्रोतों की आंशिक कमी है।
- 32% छात्रों में अनुशासन की आंशिक कमी है।

प्रधान अध्यापकों ने यह प्रतिक्रिया दी है कि
- 30% शिक्षण सामग्रियों की पूरी कमी है।
- 38% शिक्षण कर्मचारियों की पूरी कमी है।
- 11% योग्य शिक्षण कर्मचारियों की पूरी अपर्याप्तता है।
- 34% सहायक कर्मचारियों की पूरी कमी है।
- 22% योग्य सहायक कर्मचारियों की पूरी कमी या अपर्याप्तता है।
- 49% शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री की पूरी कमी है।
- 53% पुस्तकालय में विषयगत शिक्षण सामग्री स्त्रोतों की पूरी कमी है।
- 32% छात्रों में अनुशासन की पूरी कमी है।

सीखने की संप्राप्तियों में राज्य का प्रदर्शन
- भाषा (तीसरी कक्षा)
- लघु पाठ्यांश पढ़कर मुख्य बिंदु, विवरण, क्रम तथा निष्कर्ष बताते हैं।
- कक्षा कक्ष की दीवारों पर लगे पोस्टर, चार्ट्स आदि की मुद्रित सामग्री पढ़ते हैं।

SCERT TELANGANA

- भाषा (पाँचवीं कक्षा)
- कहानी की पुस्तकें, समाचार, विज्ञापन आदि स्वतंत्र रूप से पढ़ते और समझते हैं।
- किसी सामग्री को पढ़कर समझते हैं, विवरण देते हैं, घटनाओं को क्रम में रखते हैं।

- भाषा (आठवीं कक्षा)
- परिचित या अपरिचित सामग्री पढ़ते समय समझते हैं, विवरण बताते हैं, पात्रों के बारे में बताते हैं, मुख्य बिंदु बताते हैं, विचारों एवं घटनाओं को क्रम में रखते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्तियाँ

(कक्षा 6 से 10 तक)

SCERT TELANGANA

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने की संप्राप्तियाँ

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रखकर (प्रथम भाषा) के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले, दोनों) तैयार किया गया है।

- दूसरों की बातों को रुचि के साथ और ध्यान से सुनना
- अपने अनुभव संसार और कल्पना संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना
- अलग-अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना (बोलकर या इशारों से या 'साइन' लैंग्वेज द्वारा चित्र बनाकर)
- स्तरानुसार कहानी, कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और उन्हें मज़े से सुनना और सुनाना
- देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उसके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया या टिप्पणियाँ (मौखिक और लिखित रूप से) व्यक्त करना
- अपने अनुभव संसार और कल्पना संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना
- सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना
- स्तरानुसार कहानी, कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना
- लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना
- चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना
- पढ़ने की प्रतिक्रिया को दैनिक जीवन की (स्कूल और बाहर की) ज़रूरतों से जोड़ना, जैसे- कक्षा और स्कूल में अपना नाम, पाठ्यपुस्तक का नाम और अपनी मनपसंद पाठ्यसामग्री पढ़ना
- सुनी और पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में कहना और लिखना
- चित्रों को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाना
- पुस्तकालय और विभिन्न स्रोतों (रीडिंग कॉर्नर, पोस्टर, तरह-तरह की चीज़ों के रैपर, बाल पत्रिकाएँ, साइन लैंग्वेज, ब्रेल लिपि आदि) से अपनी पसंद की किताबें या सामग्री ढूँढ़कर पढ़ना
- अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखना
- मुख्य बिंदु या विचार को ढूँढ़ने के लिए विषय सामग्री की बारीकी से जाँच करना
- विषय सामग्री के माध्यम से संदर्भ के अनुसार नए शब्दों का अर्थ जानना
- मनपसंद विषय का चुनाव करके लिखना

SCERT TELANGANA

- विभिन्न विराम चिह्नों का समझ के साथ प्रयोग करना
- संदर्भ और लिखने के उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त भाषा (शब्दों, वाक्यों आदि) का चयन और प्रयोग करना
- नए शब्दों को चित्र-शब्दकोश या शब्दकोश में देखना
- भाषा की लय और तुक की समझ होना तथा उसका प्रयोग करना
- घर और विद्यालय की भाषा के बीच संबंध बनाना

उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा सीखने की संप्राप्तियाँ

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरे देश के बच्चों को ध्यान में रखकर (प्रथम भाषा) के रूप में हिंदी पढ़ने वाले और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले, दोनों) तैयार किया गया है।

- किसी भी नई रचना या किताब को पढ़ने या समझने की जिज्ञासा व्यक्त करना
- समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में दी गई खबरों या बातों को जानना-समझना
- विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति अपने रुझानों को अभिव्यक्त करना
- पढ़ी-सुनी रचनाओं को जानना, समझना, व्याख्या करना, अभिव्यक्त करना
- अपने व दूसरों के अनुभवों को कहना-सुनना-पढ़ना-लिखना। (मौखिक-लिखित-सांकेतिक रूप में)
- अपने स्तरानुकूल दृश्य-श्रव्य माध्यमों की सामग्री (जैसे- बाल साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, टेलिविजन, कंप्यूटर-इंटरनेट, नाटक, सिनेमा आदि) पर अपनी राय व्यक्त करना
- साहित्य की विभिन्न विधाओं (जैसे- कविता, कहानी, निबंध, एकांकी, संस्मरण, डायरी आदि) की समझ बनाना और उनका आनंद उठाना
- दैनिक जीवन में औपचारिक-अनौपचारिक अवसरों पर उपयोग की जा रही भाषा की समझ बनाना।
- पाठ विशेष को समझना और उससे जुड़े मुद्दों पर अपनी राय देना
- विभिन्न संदर्भों में प्रयुक्त भाषा की बारीकियों, भाषा की लय, तुक को समझना
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और विश्लेषण करना
- भाषा का नए संदर्भों या परिस्थितियों में प्रयोग करना
- अन्य विषयों, जैसे- विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि में प्रयुक्त भाषा की समुचित समझ बनाना व उसका प्रयोग करना।
- हिंदी भाषा साहित्य को समझते हुए सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूक होना
- दैनिक जीवन में तार्किक एवं वैज्ञानिक समझ की ओर बढ़ना
- पढ़ी-लिखी-सुनी-देखी-समझी गई भाषा का सृजनशील प्रयोग

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)

संप्राप्तियाँ द्वितीय भाषा (Learning Outcomes) Second Language

कक्षा - छह (द्वितीय भाषा) (हिंदी)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें- **सुनो-बोलो :** ♦ अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों। ♦ अपनी बात कहने (भाषिक और सांकेतिक माध्यम रूप से) के लिए अवसर एवं प्रोत्साहन हो। ♦ बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उन्हें शब्द-भंडार और अभिव्यक्तियों के भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे। ♦ कहानी, कविता आदि को बोलकर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों।	**बच्चे -** **सुनो-बोलो :** ♦ विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे- बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक या सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं। ♦ सुनी, देखी गई बातों, जैसे- स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं। ♦ विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे- कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना। ♦ सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं। ♦ भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनंद लेते हैं, जैसे- इन्ना, बिन्ना, तिन्ना।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	**सीखने की संप्राप्तियाँ** (Learning Outcomes)
♦ हिंदी में सुनी गई बात, कविता, खेल-गीत, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने-सुनाने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों। **पढ़ो :** ♦ कक्षा अथवा विद्यालय (पढ़ने का कोना या पुस्तकालय) में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की एवं विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषाएँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री, जैसे- बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो-वीडियो सामग्री, उपलब्ध हो। सामग्री ब्रेल में भी उपलब्ध हो, कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों को ध्यान में रखते हुए कुछ सामग्री बड़े अक्षरों में भी छपी हुई हो। ♦ तरह-तरह की कहानियों, कविताओं को चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में जीवन स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे- किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, उसे अनुभव संसार से जोड़कर देख पाना आदि।	♦ प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) और गैर-प्रिंट सामग्री (जैसे, चित्र या अन्य ग्राफ़िक्स) में अंतर करते हैं। ♦ चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं। ♦ चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रही अलग-अलग घटनाओं, गतिविधियों और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं। ♦ देखे या सुने गये विषय पर आज़ादी से बात करते हैं, प्रश्न पूछते हैं। ♦ कविता या गीत को लय और ताल के साथ गाते हैं। कविता या गीत को आग बढ़ाते हैं। ♦ पढ़ी गयी कहानी को अपनी भाषा में बोल सकते है। **पढ़ो :** ♦ पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों या शब्दों या वाक्यों आदि को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनकी पहचान करते हैं। ♦ संदर्भ की मदद से आस-पास मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं, जैसे- टॉफ़ी के कवर पर लिखे नाम को 'टॉफ़ी', लॉलीपॉप' या 'चॉकलेट' बताना। ♦ प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
लिखो : ♦ सुनी, देखी, बातों को अपनी तरीके से कागज़ पर उतारने के अवसर हों। ♦ बच्चे अक्षरों की आकृति बनाना शुरु करते हैं भले ही उनके द्वारा बनाए गए अक्षरों में सुघड़ता न हो- इसे कक्षा में स्वीकार किया जाए। ♦ बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए। ♦ आड़ी-तिरछी रेखाओं और अक्षर-आकृतियों को पहचानने के अवसर हों।	को पहचानते हैं। जैसे- नाम इसका आम है।' बताओ, यह कहाँ लिखा हुआ है? या इसमें 'नाम' कहाँ लिखा हुआ है? या 'नाम' में 'म' पर अँगुली रखो। ♦ परिचित या अपरिचित लिखित सामग्री (जैसे- मिड-डे मील का चार्ट, अपना नाम, कक्षा का नाम, मनपसंद किताब का शीर्षक आदि) में रुचि दिखाते हैं, बातचीत करते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की सूक्तियों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे- केवल चित्रों या चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर-ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना। ♦ हिंदी के वर्णमाला के चार्ट में अक्षरों की आकृति को पहचानते हैं और उनकी ध्वनि को भी पहचानते हैं। ♦ स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना या पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनते हैं और पढ़ने की कोशिश करते हैं। **लिखो :** ♦ लिखना सीखने की प्रक्रिया के दौरान अपने विकासात्मक स्तर के अनुसार चित्रों, आड़ी-तिरछी रेखाओं (कीरम-काटे), अक्षर-आकृतियों, स्व-वर्तनी (इंनवेंटिड स्पैलिंग) और स्व-नियंत्रित

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	लेखन (कनवैंशनल राइटिंग) के माध्यम से सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से लिखने का प्रयास करते हैं। ♦ सीखे हुए अक्षरों से शब्दों का निर्माण करते हैं। ♦ वर्णमाला के आधार पर सरल शब्दों की रचना करते हैं। ♦ संयुक्ताक्षर, द्वित्वाक्षर शब्द लिखते हैं। ♦ चित्र के आधार पर सरल शब्द और संयुक्त शब्द लिखते हैं। वाक्य भी लिखते हैं। ♦ बिना गलतियों के सुंदर अक्षरों में लिखते हैं। ♦ श्रुतलेख लिखते हैं। **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** ♦ स्वयं बनाए गए चित्रों के नाम लिखते (लेबलिंग) हैं। ♦ चित्र बनाकर, रंग भरते हैं। चित्र का शीर्षक लिखते हैं। ♦ बाल गीत अभिनय के साथ गाते हैं। ♦ बाल गीतों को आगे बढ़ाते हैं।

SCERT TELANGANA

कक्षा – सात (द्वितीय भाषा) (हिंदी)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें- **सुनो-बोलो :** ♦ अपनी भाषा में बातचीत करने तथा चर्चा करने के अवसर हों। ♦ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ♦ अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। ♦ कहानी, कविता आदि को बोलकर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों। **पढ़ो :** ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषा की पुस्तकें पढ़ने के अवसर हों। ♦ स्थानीय रचनाओं को पढ़कर उन पर चर्चा करने के अवसर हों। **लिखो :** ♦ समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ♦ हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने की सुविधा (ब्रेल या सांकेतिक रूप में भी) और उन पर	**बच्चे –** **सुनो-बोलो :** ♦ विभिन्न उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे- जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि। ♦ विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं। ♦ किसी लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं। ♦ किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक या सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं। ♦ चर्चा में भाग लेते हैं और अपने अभिप्रायों को स्पष्ट रूप से अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं। ♦ विभिन्न संवेदनशील मुद्दों या विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाज़ों के बारे में मौखिक रूप से अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। ♦ देखो, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
बातचीत की आज़ादी हो। ♦ सक्रिय और जागरुक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फ़िल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। **शब्द भंडार :** ♦ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे- शब्द खेल, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ आदि। ♦ शब्द भंडार की वृद्धि के लिए शब्द-सीढ़ी, शब्द अंत्याक्षरी जैसे क्रियाकलाप करने के अवसर उपलब्ध हों। **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** ♦ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे- अभिनय, रोल प्ले, कविता पाठन, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हो और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।	प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। **पढ़ो :** ♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं या परिचर्चा करते हैं। ♦ विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भा,ा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं। ♦ अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर उनके उत्तर लिखते हैं। उन पर प्रश्न बनाते हैं। ♦ कविता या कहानी पढ़कर उसकी शैली के प्रति समझ बनाते हैं। उदाः वर्णनात्मक, चित्रात्मक आदि। ♦ सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं। ♦ किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं। ♦ कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि। **लिखो :** ♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	उत्तर अपने शब्दों में लिखते हैं। ♦ किसी भी विषय को पढ़कर समझते हैं और उसके पक्ष या विपक्ष में लिखते हैं। ♦ विभिन्न संवेदनशील मुद्दों या विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग, जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। ♦ भित्ति पत्रिका या पत्रिका आदि के लिए तरह-तरह की सामग्री जुटाते हैं, लिखते हैं और उनका संपादन करते हैं। ♦ विभिन्न अवसरों या संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- अपने गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह-तरह के कार्य करने वालों की बातचीत। ♦ हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार-पत्र या पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं। ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। **शब्द भंडार :** ♦ किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरुरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का प्रयोग करते हैं। ♦ विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं। ♦ भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं, जैसे- एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने...। **भाषा की बात :** ♦ भाषा की बारीकियों या व्यवस्था को समझते हैं तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं। ♦ विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों और वाक्य संरचनाओं का प्रयोग करते हैं। **प्रशंसा :** ♦ अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। ♦ अपने प्रांत से संबंधित कविता या गीत या कहानियाँ पढ़कर उनकी प्रशंसा करते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	♦ अन्य भाषा, जाति, कला, संस्कृति से संबंधित विषयों के महत्व को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं। **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** ♦ कहानी या कविता का सृजन करते हैं, संवाद लिखते हैं, गीत या कविता का गायन करते हैं, गीत या कविता या संवाद या कहानी आगे बढ़ाते हैं। नारे, सूक्तियाँ, पोस्टर, विज्ञापन तैयार करते हैं।

SCERT TELANGANA

कक्षा – आठ (द्वितीय भाषा) (हिंदी)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें- **सुनो-बोलो :** ♦ अपनी भाषा में बातचीत करने तथा चर्चा तथा विश्लेषण करने के अवसर हों। ♦ जीवन से जोड़कर विषय को समझने के अवसर हों। ♦ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ♦ समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ♦ हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल या सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। **पढ़ो :** ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषा की पठन सामग्रियों को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ स्थानीय रचनाओं को पढ़कर, प्रतिक्रिया करने के अवसर हो। **लिखो :** ♦ सक्रिय और जागरुक बनाने वाली	**बच्चे –** **सुनो-बोलो :** ♦ विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं। ♦ हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक या सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ सुनी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। ♦ अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते या सुनाते हैं। ♦ सुनकर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक या सांकेतिक भाषा में बताते हैं। ♦ विभिन्न संवेदनशील मुद्दों या विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। ♦ सुने गये, पढ़े गये विषयों पर अपने विचार लिखने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ विषय का विवरण लिखने, कारण लिखने, सहमति या असहमति लिखने की स्वतंत्रता हो। **शब्द भंडार :** ♦ संदर्भानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ शब्दकोश के उपयोग की सुविधा हो। ♦ शब्द भंडार की वृद्धि के लिए भाषा-खेल के अवसर उपलब्ध हों। ♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों। **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** ♦ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों, जैसे- शब्द खेल, कविता, गीत, चुटकुले, पत्र आदि। ♦ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे- अभिनय, रोल-प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों।	हैं, जैसे- अपने मोहल्ले के लोगों से त्यौहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना। ♦ कविता या गीत लय और ताल के साथ गाते हैं। ♦ किसी विषय पर अपनी सहमति या असहमति प्रकट करते हैं। **पढ़ो :** ♦ कविता या गीत, कहानी, संवाद आदि धारा प्रवाह के साथ पढ़ते हैं। ♦ परिचित या अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर समझते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हैं। जोड़ियाँ बनाते हैं। पाठ आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। कविता या घटना का सही क्रम निर्धारित करते हैं। ♦ किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं। ♦ विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। ♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	♦ किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रुरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का प्रयोग करते हैं। **लिखो :** ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा-शैली में लिखित रूप में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति विवरण आदि। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प को समझते हैं और अपने स्तरानुकूल उसके बारे में अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करते हैं। ♦ पढ़ने और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं। ♦ पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। ♦ पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखते हैं। ♦ विषय का विश्लेषण कर, उसकी सहमति या असहमति पर अपने विचार लिखते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	♦ विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं। **भाषा की बात :** ♦ भाषा की बारीकियों या व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे- कविता के शब्दों को बदलकर लिखना अर्थ और लय को समझना। ♦ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण का प्रयोग समझकर उसका उपयोग करते हैं। **शब्द भंडार :** ♦ संदर्भानुसार, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करते हैं। ♦ पर्याय शब्द, भिन्नार्थक, शब्द-संक्षेप, शब्द-विस्तार आदि लिखते हैं। ♦ शब्दकोश का समुचित प्रयोग करते हैं। **सृजनात्मक अभिव्यक्ति :** ♦ विभिन्न अवसरों या संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के विभिन्न व्यवसायों से संबंधित लोगों से बातचीत। ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे- विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) या कोई अनुभव लिखना।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	♦ दैनिक जीवन से अलग किसी घटना या स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे- सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि। ♦ अभिव्यक्ति की विविध शैलियों या रूपों को पहचानते हैं और स्वयं कविता, कहानी, निबंध आदि लिखते हैं। **प्रशंसा :** ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। ♦ रचनाकार की शैली की प्रशंसा करते हैं। ♦ विभिन्न विषयों के महत्व को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

SCERT TELANGANA

कक्षा – नौ (द्वितीय भाषा) (हिंदी)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें- **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :** ♦ अपनी भाषा में बातचीत करने तथा चर्चा तथा विश्लेषण करने के अवसर हों। ♦ जीवन से जोड़कर विषय को समझने के अवसर हों। ♦ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ♦ समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ♦ हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल या सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। ♦ अपने परिवेश, समय से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं की पठन सामग्रियों को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषा की पठन सामग्रियों को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।	**बच्चे –** **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :** ♦ विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं। ♦ हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक या सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ सुनी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। ♦ अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते या सुनाते हैं। ♦ सुनकर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक या सांकेतिक भाषा में बताते हैं। ♦ विभिन्न संवेदनशील मुद्दों या विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ स्थानीय रचनाओं को पढ़कर, प्रतिक्रिया करने के अवसर हो। **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :** ♦ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों, जैसे- शब्द खेल, कविता, गीत, चुटकुले, पत्र आदि। ♦ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे- अभिनय, रोल-प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। ♦ सक्रिय और जागरुक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। ♦ सुने गये, पढ़े गये विषयों पर अपने विचार लिखने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ विषय का विवरण लिखने, कारण लिखने, सहमति या असहमति लिखने की स्वतंत्रता हो। **भाषा की बात :** ♦ शब्दकोश के उपयोग की सुविधा हो। ♦ संदर्भानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ शब्द भंडार की वृद्धि के लिए भाषा-खेल के अवसर उपलब्ध हों।	हैं, जैसे- अपने मोहल्ले के लोगों से त्यौहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना। ♦ कविता या गीत लय और ताल के साथ गाते हैं। ♦ किसी विषय पर अपनी सहमति या असहमति प्रकट करते हैं। ♦ कविता या गीत, कहानी, संवाद आदि धारा प्रवाह के साथ पढ़ते हैं। ♦ परिचित या अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर समझते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हैं। जोड़ियाँ बनाते हैं। पाठ आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। कविता या घटना का सही क्रम निर्धारित करते हैं। ♦ किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं। ♦ विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। ♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों।	♦ किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रुरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का प्रयोग करते हैं। **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :** ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा-शैली में लिखित रूप में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति विवरण आदि। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प को समझते हैं और अपने स्तरानुकूल उसके बारे में अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करते हैं। ♦ पढ़ने और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं। ♦ पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। ♦ पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखते हैं। ♦ विषय का विश्लेषण कर, उसकी सहमति या असहमति पर अपने विचार लिखते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	♦ विविध कलाओं, जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं। ♦ विभिन्न अवसरों या संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के विभिन्न व्यवसायों से संबंधित लोगों से बातचीत। ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे- विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) या कोई अनुभव लिखना। ♦ दैनिक जीवन से अलग किसी घटना या स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे- सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि। ♦ अभिव्यक्ति की विविध शैलियों या रूपों को पहचानते हैं और स्वयं कविता, कहानी, निबंध आदि लिखते हैं। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। ♦ रचनाकार की शैली की प्रशंसा करते हैं। ♦ विभिन्न विषयों के महत्व को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
	भाषा की बात : ♦ भाषा की बारीकियों या व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे- कविता के शब्दों को बदलकर लिखना अर्थ और लय को समझना। ♦ संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण का प्रयोग समझकर उसका उपयोग करते हैं। ♦ संदर्भानुसार, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करते हैं। ♦ पर्याय शब्द, भिन्नार्थक, शब्द-संक्षेप, शब्द-विस्तार आदि लिखते हैं। ♦ शब्दकोश का समुचित प्रयोग करते हैं।

SCERT TELANGANA

कक्षा – दस (द्वितीय भाषा) (हिंदी)

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें- **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :** ♦ समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो। ♦ हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने (ब्रेल या सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। ♦ अपने परिवेश, समय से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। ♦ अपनी भाषा में बातचीत करने तथा चर्चा तथा विश्लेषण करने के अवसर हों। ♦ जीवन से जोड़कर विषय को समझने के अवसर हों। ♦ प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों। ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं की पठन सामग्रियों को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषा की पठन सामग्रियों को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।	**बच्चे –** **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :** ♦ अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते या सुनाते हैं। ♦ सुनकर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक या सांकेतिक भाषा में बताते हैं। ♦ विभिन्न संवेदनशील मुद्दों या विषयों, जैसे- जाति, धर्म, रंग जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं, जैसे- अपने मोहल्ले के लोगों से त्यौहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना। ♦ विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं। ♦ हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक या सांकेतिक भाषा

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ स्थानीय रचनाओं को पढ़कर, प्रतिक्रिया करने के अवसर हो। **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :** ♦ अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ हों, जैसे- शब्द खेल, कविता, गीत, चुटकुले, पत्र आदि। ♦ कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे- अभिनय, रोल-प्ले, कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर हों। ♦ सक्रिय और जागरुक बनाने वाली रचनाएँ, अखबार, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों। ♦ सुने गये, पढ़े गये विषयों पर अपने विचार लिखने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ विषय का विवरण लिखने, कारण लिखने, सहमति या असहमति लिखने की स्वतंत्रता हो। **भाषा की बात :** ♦ शब्दकोश के उपयोग की सुविधा हो। ♦ संदर्भानुसार शब्दों के अर्थ ग्रहण करने के अवसर उपलब्ध हों। ♦ शब्द भंडार की वृद्धि के लिए भाषा-खेल के अवसर उपलब्ध हों।	में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ सुनी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। ♦ कविता या गीत लय और ताल के साथ गाते हैं। ♦ किसी विषय पर अपनी सहमति या असहमति प्रकट करते हैं। ♦ कविता या गीत, कहानी, संवाद आदि धारा प्रवाह के साथ पढ़ते हैं। ♦ परिचित या अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर समझते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हैं। जोड़ियाँ बनाते हैं। पाठ आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। कविता या घटना का सही क्रम निर्धारित करते हैं। ♦ किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं। ♦ विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। ♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। ♦ किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रुरत पड़ने पर अपने

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों।	किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे- शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का प्रयोग करते हैं। **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :** ♦ पढ़ने और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं। ♦ पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं। ♦ पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखते हैं। ♦ विषय का विश्लेषण कर, उसकी सहमति या असहमति पर अपने विचार लिखते हैं। ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा-शैली में लिखित रूप में अभिव्यक्त करते हैं। ♦ कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं, जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति विवरण आदि। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों को पढ़ते हुए उनके शिल्प को समझते हैं और अपने स्तरानुकूल उसके बारे में अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त करते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों।	♦ पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं। ♦ कविता या गीत लय और ताल के साथ गाते हैं। ♦ किसी विषय पर अपनी सहमति या असहमति प्रकट करते हैं। ♦ कविता या गीत, कहानी, संवाद आदि धारा प्रवाह के साथ पढ़ते हैं। ♦ परिचित या अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर समझते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। रिक्त स्थानों की पूर्ति करते हैं। जोड़ियाँ बनाते हैं। पाठ आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। कविता या घटना का सही क्रम निर्धारित करते हैं। ♦ किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं, जैसे- अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं। ♦ विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं। ♦ विभिन्न अवसरों या संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे- स्कूल के किसी कार्यक्रम की रिपोर्ट बनाना या फिर अपने गाँव के विभिन्न व्यवसायों से संबंधित लोगों

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)
♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों।	से बातचीत। ♦ अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं। लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं, जैसे- विभिन्न तरीकों से (कहानी, कविता, निबंध आदि) या कोई अनुभव लिखना। ♦ दैनिक जीवन से अलग किसी घटना या स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे- सोशल मीडिया पर, नोटबुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि। ♦ अभिव्यक्ति की विविध शैलियों या रूपों को पहचानते हैं और स्वयं कविता, कहानी, निबंध आदि लिखते हैं। ♦ विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं। ♦ रचनाकार की शैली की प्रशंसा करते हैं। ♦ विभिन्न विषयों के महत्व को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं। **भाषा की बात :** ♦ पर्याय शब्द, भिन्नार्थक, शब्द-संक्षेप, शब्द-विस्तार आदि लिखते हैं। ♦ शब्दकोश का समुचित प्रयोग करते हैं। ♦ भाषा की बारीकियों या व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे- कविता के शब्दों को बदलकर लिखना अर्थ और लय को समझना।

SCERT TELANGANA

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया (Teaching-Learning Process)	**सीखने की संप्राप्तियाँ** (Learning Outcomes)
♦ मैगजीनों और समाचार पत्रों में वर्ग-पहेली के अभ्यास करने के अवसर हों।	♦ कारक, काल, वाच्य, उपसर्ग, प्रत्यय, वाक्य भेद, शब्द भेद के प्रयोग समझकर उसका उपयोग करते हैं। ♦ संदर्भानुसार, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्तियों का स्वरूप शिक्षण व्यूह

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - सुनना-बोलना

परिचय :

- किसी विषय की समझ और उसकी मौखिक अभिव्यक्ति के लिए 'सुनना-बोलना' सीखने की संप्राप्ति का बड़ा महत्व है।
- सुनना-बोलना के द्वारा ही बालक अपनी अभिव्यक्ति का परिचय देता है।
- सुनना-बोलने का अर्थ किसी विषय को सुनकर समझकर उसके प्रति अपनी अभिव्यक्ति देना है।
- सुनने-बोलने की क्षमता में निपुणता प्राप्त करने वाला बालक आगे चलकर वक्ता, विषय-विश्लेषक, आलोचक, चिंतक आदि बनता है।

उद्देश्य :

- सुनना-बोलना सीखने की संप्राप्ति के द्वारा सरल शब्दों, सरल वाक्यों, चित्रों, वीडियो, कहानी, बालगीत, चित्रकथा आदि के बारे में बातचीत करना है।
- इस संप्राप्ति के द्वारा मन की भावनाओं को मौखिक रूप में स्पष्ट करने की प्रक्रिया संपन्न करने के लक्ष्य की प्राप्ति करना है।
- चित्र वर्णन, घटना वर्णन, वार्तालाप, संवाद, कहानी कहना, प्रश्नोत्तर, अभिनय चर्चा, सामूहिक चर्चा, व्याख्यान, भाषण, वाद-विवाद आदि के द्वारा बच्चे में बोलने की क्षमता का विकास करना है।
- सुनने-बोलने के द्वारा विचार करने के भरपूर अवसर की संभावना विकसित करना है।

सुनने-बोलने की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- बालक अपने विचार, अनुभव, वस्तु विशेष का वर्णन करते हैं।
- सीखे गए शब्दों का स्वयं और सहपाठियों की मातृभाषा में क्या कहा जाता है? इसके बारे में चर्चा करते हैं।
- अपने निजी अनुभव साथियों को सुनाते हैं।
- अपने स्तर के चित्र, बालगीत, चित्रकथा आदि के बारे में बातचीत करते हैं।
- पढ़ी गयी या परिचित कविता, कहानी, वार्तालाप, पत्र, लघु निबंध इत्यादि के बारे में बातचीत करते हैं।
- सफलता के लिए आवश्यक गुणों, नैतिक गुणों, घरेलू उद्योगों का परिचय, प्रकृति के बारे

SCERT TELANGANA

में बातचीत, विज्ञान की जानकारी, ऐतिहासिक स्थानों का परिचय, बुद्धिमता, सिनेगा, पोलियो खुराक़, डायरी, संस्कृति, सहायता, पर्यावरण, खेल, धैर्य, जागरुकता, लिंग समानता, लोकगीत, भक्ति, विज्ञान आदि के बारे में बातचीत करते हैं।

सुनने-बोलने की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- अधिकतर तेलुगु मातृभाषी होने के कारण बालक अपने विचार, अनुभव, वस्तु विशेष का वर्णन कर पाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- पाठशाला, कक्षा अथवा घर के पास घटी घटनाओं का मित्रों से चर्चा कर पाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- ठीक से न सुनाई देने की अथवा सुनने की समस्या का सामना करते हैं।
- कक्षा का वातावरण ठीक न होने से सुनने-बोलने में कठिनाई का सामना करते हैं।
- बच्चे कक्षा में समुचित स्थान न पाकर सुनने-बोलने की संप्राप्ति में कठिनाई का सामना करते हैं।
- चर्चा में भाग लेना, बातचीत करना, वर्णन आदि में भाषा वातावरण की कमी के कारण अभिव्यक्ति में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

सुनना-बोलना संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- बच्चों से पात्राभिनय कराना।
- वस्तुओं, स्थानों और व्यक्तियों के बारे में मनोरेखा चित्रण के द्वारा बातचीत कराना।
- भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।
- हाव-भाव के साथ कथन व्यक्त कराना।
- समस्यात्मक अंशों पर वाद-विवाद में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- सामूहिक कार्यों द्वारा प्राप्त ज्ञान जैसे पुस्तक समीक्षा, परियोजना कार्य के अंतर्गत प्रस्तुतीकरण के समय बातचीत कराना।
- सुनी गयी बातों का मूकाभिनय के द्वारा संकेतों में व्यक्त कराना।

साधन :

- चित्र, चार्ट आदि की सहायता से बातचीत
- मनोरेखा चित्रण
- संकेत बिंदुओं के आधार पर बातचीत कराना
- सुनने-बोलने संबंधी भाषा खेल

SCERT TELANGANA

- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा छात्रों से बातचीत कराना। जैसेः गीत-संगीत, सिनेमा, नाटक आदि दिखाकर उससे जुड़ी चर्चा करना।

उदाहरण :

- भाषण प्रतियोगिता
- वाद-विवाद प्रतियोगिता
- भाषा खेल
- साक्षात्कार
- अभिनययुक्त कथन बोलना
- एक-दूसरे का परिचय कराना
- किसी भी विषय पर अपने विचार रखना आदि

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - पढ़ना

परिचय :

- पढ़ना का अर्थ है- पढ़ना, पढ़कर समझना और प्रतिक्रिया करना।
- पढ़ी हुई बात या पढ़े गये अंशों को समझना और उस पर प्रतिक्रिया करना।
- कविता, कहानी, निबंध आदि को पढ़कर समझना।
- संवाद पाठ में पात्रानुसार अभिनय शैली में पढ़ना।

उद्देश्य :

- अक्षर व मात्राएँ जोड़कर पढ़ना है।
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठ पढ़कर समझने की क्षमता विकसित करना है।
- समाचार-पत्र में समाचार पढ़कर समझना है।
- सार्वजानिक स्थानों में निर्देशों को पढ़कर समझना है।
- पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठ पढ़कर उनके प्रति अपने विचार प्रकट करने के सामर्थ्य का विकास करना है।
- समाचार-पत्र के समाचार पढ़कर प्रतिक्रिया करना है।
- पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य बाल-साहित्य की पुस्तकें पढ़कर समझना है। उसके प्रति अपने विचार प्रकट करना है।
- किसी विषय को पढ़कर उसके प्रति तर्क-वितर्क प्रस्तुत करना है।
- किसी पढ़े गये अंश का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
- किसी भी पढ़े गये अंश से नीति ग्रहण करना है।

पढ़ने की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- पढ़ी कहानी, कविताओं आदि में लिपि चिह्नों या शब्दों या वाक्यों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर समझकर उनकी पहचान करते हैं।
- लिखे या छपे हुए अक्षर और वाक्य की इकाइयों को पहचानते हैं। जैसेः यह आम है। बताओ आम कहाँ लिखा है या 'म' पहचानिए।
- संदर्भ की मदद से मौजूद प्रिंट के अर्थ और उद्देश्य का अनुमान लगाते हैं। जैसेः टॉफी के कवर पर लिखा हुआ - 'टॉफी'

- हिंदी के वर्णमाला चार्ट में अक्षरों की आकृति को पहचानते हैं और ध्वनि को भी पहचानते हैं।
- बाल-गीत कविता आदि लय और ताल के साथ गाते हैं।
- पढ़ी गयी सामग्री की बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं या परिचर्चा करते हैं।
- अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर उनके उत्तर लिखते हैं। उन पर प्रश्न बनाते हैं।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं।
- विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसेः कहानी, कविता, निबंध, संस्मरण आदि को पढ़ते हुए उसके विशेष बिंदु को खोजते हैं।
- पढ़ी गयी सामग्री को समझने के लिए शब्दकोश, विश्वकोश, मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों का उपयोग करते हैं।
- किसी विषय पर अपनी सहमति या असहमति प्रकट करते हैं।
- परिचित या अपरिचित गद्य या पद्य पढ़कर प्रतिक्रिया करते हैं।

पढ़ने की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- अक्षर संकेतीकरण, अर्थग्राह्यता, अमलीकरण करने में कठिनाई का सामना करते हैं।
- अक्षर व स्वर के उच्चारण में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- वर्तनीयुक्त शब्दों को पढ़ने में कठिनाई का आभास करते हैं।
- वाक्य पढ़ने में कठिनाई का सामना करते हैं।
- पढ़े गये शब्द, वाक्य, कविता, कहानी को समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।
- पढ़े गये अंश को समझकर उसके प्रति प्रतिक्रिया करने में कठिनाई का आभास करते हैं।
- पाठ्य-पुस्तक के पाठों के अतिरिक्त बाल साहित्य आदि को पढ़कर समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं।
- पठित सामग्री के विशेष बिंदु को पहचानने में कठिनाई का सामना करते हैं।

पढ़ना संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- अक्षर व स्वर का उच्चारण कराना।
- बालगीतों का सस्वर वाचन कराना।
- पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त हाव-भाव वाले गीत ढूँढ़कर बच्चों द्वारा सस्वर वाचन कराना।
- ह्रस्व व दीर्घ स्वरों का तुलनात्मक अभ्यास कराना।
- चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर पढ़ने के अवसर उपलब्ध कराना।

- पढ़े गये अंश में संज्ञा शब्दों पर चर्चा कराना।
- क्रिया शब्दों पर चर्चा कराना।
- पढ़े गये अंश के विभिन्न मुद्दों की तुलनात्मक चर्चा कराना।
- अपने परिवेश समय और संस्कृति से संबंधित रचनाओं को पढ़कर और उन पर चर्चा करने के अवसर देना।

साधन :

- चार्ट्स
- पी. पी. टी.
- भाषा खेल
- आई. सी. टी. साधन
- फ्लैश कार्ड्स

उदाहरण :

1. **क्रियाकलाप (सामूहिक) :**

- बच्चों को समूह में बाँटना।
- ह्रस्व व दीर्घ स्वर नाम देना।
- ह्रस्व समूह को ह्रस्व अक्षर से आरंभ होने वाले अक्षर व शब्द कहलवाना।
- दीर्घ स्वर से दीर्घ अक्षर व उससे आरंभ होने वाले अक्षर व शब्द कहलवाना।

2. **क्रियाकलाप (सामूहिक) :**

- बच्चों को समूह में बाँटना।
- प्रत्येक समूह को एक-एक अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहना।
- प्रत्येक समूह को व्याकरण के विभिन्न अंश जैसेः संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, पुनरुक्ति शब्द पहचानने के लिए कहना।
- उनकी तालिका बनाने के लिए कहना।
- प्रस्तुतीकरण करवाना।

3. **क्रियाकलाप (सामूहिक या व्यक्तिगत) :**

- बच्चों को सामूहिक या व्यक्तिगत रूप में पुस्तक पढ़वाना।
- उनमें से मुख्य बिंदु का चयन करवाना।

SCERT TELANGANA

- मुख्य बिंदु पर कक्षा में चर्चा कराना।

4. **क्रियाकलाप (व्यक्तिगत) :**

- बच्चों से व्यक्तिगत रूप से गद्य या पद्य पढ़ाना।
- उनमें से कठिन शब्दों का चयन करने लिए कहना।
- व्याकरण अंश का चयन कर तालिका में लिखने के लिए कहना।
- मुख्य बिंदु का चयन करने के लिए कहना।
- पढ़े गये अंश से प्रश्न तैयार करने के लिए कहना।
- चर्चा कराना।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - लिखना

परिचय :

- अपने विचारों और भावों की अपने शब्दों में लिखित अभिव्यक्ति ही 'लिखना' है।
- भाषा संबंधी दो प्रकार की विचारधाराएँ हैं।

  1. भाषा एक सांकेतिक साधन है। 2. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है। बच्चों में विचार होते हैं।
- भाषा शिक्षक के सामने दो प्रकार की चुनौतियाँ हैं। 1. बच्चा सुनी हुई या ज्ञात ध्वनि को लिपिबद्ध कर सके। 2. बच्चा अपने विचारों को प्रभावी, क्रमबद्ध ढंग से लिखित रूप में प्रस्तुत कर सके।
- छठवीं कक्षा (द्वितीय भाषा के रूप में) में अक्षर, मात्रा, आधे अक्षर से बने शब्दों को लिखना सिखाने का उद्देश्य प्राथमिक है। इसके साथ-साथ शब्द, वाक्य भी सिखाना है। सीखने की संप्राप्तियों में कक्षावार लिखने के इन्हीं उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य :

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से अपने शब्दों में लिख सकने की क्षमता का विकास करना है।
- सुंदर, स्पष्ट ढंग से लिखने के सामर्थ्य का विकास करना है।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और शब्दों का चयन करने और संरचना करने की क्षमता का विकास करना है।
- बिना त्रुटियों के, विराम चिह्नों का उपयोग कर क्रमानुसार लिखने की क्षमता का विकास करना है।

लिखने की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- सीखे हुए अक्षरों से शब्दों का निर्माण करते हैं।
- वर्णमाला के आधार पर सरल शब्दों की रचना करते हैं।
- संयुक्ताक्षर, द्वित्वाक्षर शब्द लिखते हैं। शब्दों से वाक्य बनाते हैं।
- बिना त्रुटियों के सुंदर अक्षरों में लिखते हैं।
- किसी भी विषय को पढ़कर समझते हैं और उसके पक्ष या विपक्ष में लिखते हैं।
- विभिन्न संवेदनशील मुद्दों जैसेः जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाजों के बारे में लिखित रूप से तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं।

SCERT TELANGANA

- अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं।
- कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं जैसेः वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
- विषय का विश्लेषण कर उसकी सहमति या असहमति पर अपने विचार रखते हैं।

लिखने की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- वर्तनी दो
- लेखन की अस्पष्टता
- अर्थ संप्रेषण की कमी
- वाक्य निर्माण क्रम की अशुद्धता
- अर्थ या संदर्भ संगत शब्दों का प्रयोग न कर पाना।
- विराम चिह्नों का उचित प्रयोग न कर पाना।

लिखना संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- सुनी, देखी बातों को अपने तरीके से कागज़ पर लिखाना।
- समूह में चर्चा करते हुए लिखने के अवसर प्रदान कराना।
- विद्यालय, विभाग या कक्षा की पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन देना।
- विषय का विवरण लिखने, कारण लिखने, सहमति या असहमति लिखने की स्वतंत्रता देना।

साधन :

- सूक्ति लेखन
- श्रुतलेख
- मनोरेखा चित्रण
- संकेत बिंदुओं के आधार पर लिखाना
- लेखन संबंधी भाषा खेल

उदाहरण :

- मनोरेखा चित्रण

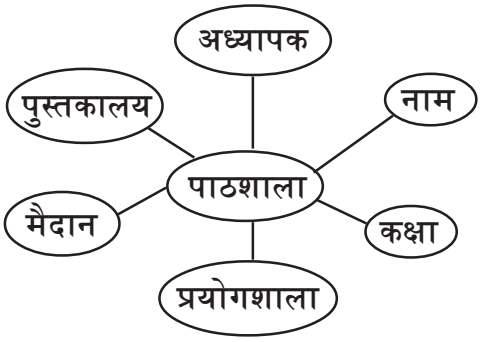

SCERT TELANGANA

इसके आधार पर 'पाठशाला' के बारे में लिखवायें।

जैसेः 1. मेरी पाठशाला का नाम ..... है।

- सारांश लेखन
  - भूमिका
  - संदर्भ (कवि का विचार)
  - विषय का विस्तार
  - अपना मत (निष्कर्ष या उपसंहार)
- दैनिक जीवन में लेखन
  - बायोडेटा और प्रपत्र भरवाना।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - प्रशंसा

परिचय :

- किसी तथ्य या विषय के महत्व और नीति को समझकर उसके प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करना प्रशंसा है।
- शिक्षण में प्रशंसा का बड़ा महत्व है।
- दंड देने से प्रशंसा करना उत्तम समझा गया है। इसलिए हमें चाहिए कि हम छात्र की प्रशंसा करें। उसे अन्य व्यक्तियों और विषयों के महत्व को समझने के लिए प्रेरित करें।

उद्देश्य :

- फूलों और फलों के चित्र देखकर उनमें उचित रंग भरना है।
- पाठ के सार की प्रशंसा करना है।
- रोने, हँसने के भावों को समझकर, रोते बच्चों की सहायता करना तथा उनका धैर्य बढ़ाना और उनकी सराहना करना है।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं-लोकगीतों के बारे में चर्चा और सराहना करना है।
- अपने प्रांत से संबंधित कविता, गीत या कहानी पढ़कर उनकी प्रशंसा करना है।
- अन्य भाषा, जाति, कला, संस्कृति से संबंधित विषयों के महत्व को समझना और उनकी सराहना करना है।

प्रशंसा की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- फूलों और फलों के चित्र देखकर उनमें उचित रंग भरते हैं।
- पाठ के सार की प्रशंसा करते हैं।
- रोने, हँसने के भावों को समझकर, रोते बच्चों की सहायता करते हैं तथा उनका धैर्य बढ़ाते हैं। उनकी सराहना करते हैं।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं-लोकगीतों के बारे में चर्चा और सराहना करते हैं।
- अपने प्रांत से संबंधित कविता या गीत या कहानी पढ़कर उनकी प्रशंसा करते हैं।
- अन्य भाषा, जाति, कला, संस्कृति से संबंधित विषयों के महत्व को समझते हैं और उनकी सराहना करते हैं।

SCERT TELANGANA

प्रशंसा की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- बच्चों को पाठ्यांश पढ़कर उसके महत्व को समझने में कठिनाई होती है।
- वार्तालाप करने में, अभिनय करने में बच्चों को कठिनाई आती है।
- दिये गये संकेतों के अनुसार या पढ़कर समझने में कठिनाइयाँ होती हैं।

प्रशंसा की संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- प्रश्न श्यामपट पर लिखें।
- छात्रों से चर्चा करवायें।

साधन :

- सामूहिक कार्य
- परियोजना कार्य
- अवबोध प्रदर्शन
- नृत्याभिनय
- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा छात्रों से बातचीत कराना। जैसेः गीत-संगीत, सिनेमा, नाटक आदि दिखाकर उससे जुड़ी चर्चा करना।

उदाहरण :

- वार्तालाप, पात्राभिनय आदि करने के बाद बच्चों की प्रशंसा करना।
- बच्चों से चित्र उतरवाकर रंग भरने के लिए कहना।
- बच्चों को अलग-अलग समूहों में बाँटकर किसी विषय पर चर्चा कराना। प्रशंसा करना।
- विषय को पढ़कर, समझकर, एकल अभिनय, नाटक के रूप में प्रदर्शित करने को कहना। प्रशंसा करना।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - शब्द भंडार

परिचय :

- 'शब्द' भाषा का मूलाधार है। इसे भाषा की निधि भी कहा जाता है। शब्द का संबंध अर्थ तथा अर्थ का संबंध भावों व विचारों से होता है। जिसके पास जितना शब्द भंडार होगा वह उतने ही सशक्त रूप से भावाभिव्यक्ति कर सकेगा।
- शब्द भंडार के विकास पर ही भाषा का विकास निर्भर है।
- भाषा में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के शब्दों के समुदाय को शब्द भंडार कहते हैं। अर्थात् बच्चे शब्द भंडार के द्वारा ही इनका संदर्भानुसार प्रयोग करने में उत्तम हो सकेंगे।

उद्देश्य :

- शब्द भंडार को भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण घटक के रूप में माना जात है। अतः इसका अच्छी तरह से अभ्यास करना है।
- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के आधार पर शब्द भंडार में वृद्धि करना है।
- सीखे हुए शब्दों का प्रयोग वाक्यों में संदर्भोचित ढंग से करना है।
- अपने विचारों अथवा भावों की अभिव्यक्ति मौखिक और लिखित रूप में करना है।

शब्द भंडार की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- चित्रों या संदर्भों के आधार पर नये शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- मातृभाषा में शब्दों का अनुवाद करते हुए शब्द बनाते हैं।
- मात्राओं के स्थान परिवर्तन के द्वारा नये शब्दों का निर्माण करते हैं और अर्थ को समझते हैं। उदाहरण के लिए मन, मान, मना आदि।
- दो, तीन या चार अक्षर वाले शब्दों से परिचित होते हैं और मौखिक रूप में प्रयोग करते हैं।
- शब्दों का प्रयोग वाक्यों में करते हैं। भाव अभिव्यक्त करते हैं।
- अर्थ के आधार पर शब्दों का सही प्रयोग करते हैं।
- शब्द भेद (लिंग, वचन, पर्याय, भिन्नार्थी, विलोम, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज आदि) में अंतर समझते हैं।
- वर्तनी शुद्ध करते हैं।
- विविध कलाओं जैसे हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में

SCERT TELANGANA

प्रयुक्त शब्दों के प्रति अपनी जिज्ञासा व्यक्त करते हैं।

- मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग दैनिक जीवन में करते हैं।

शब्द भंडार की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- पाठ में आये नये शब्दों के अर्थ को समझना और उसका प्रयोग न कर पाना।
- इन नये शब्दों का प्रयोग अपने कक्षा-कक्ष या दैनिक जीवन में न कर पाना।
- शब्द का एक ही अर्थ नहीं होता उसका अर्थ संदर्भानुसार बदलता रहता है। इसे न समझ पाना।
- अहिंदी भाषी होने के कारण इन शब्दों का प्रयोग दैनिक जीवन में नहीं कर पाना।
- शब्द भेद, पर्याय शब्द, भिन्नार्थक, शब्द विचार का प्रयोग न कर सकना।

शब्द भंडार की संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- चित्र के माध्यम से अर्थबोध
- तुलना के द्वारा अर्थबोध
- सही शब्द चुनना
- सही अर्थ से जोड़ी बनाना
- बेमेल शब्द चुनना
- श्रव्य-दृश्य के माध्यम से नये शब्दों को जानना
- बातचीत या वार्तालाप के द्वारा संदर्भानुसार प्रयोग करना
- रोल प्ले (पात्र अभिनय) द्वारा शब्दों का प्रयोग करना
- वर्गपहेली के द्वारा शब्दों को चुनना (पत्रिकाओं, समाचार पत्रों) रिक्त स्थानों में उचित शब्दों का प्रयोग करना
- प्रश्नोत्तर के द्वारा
- भाषा-खेल (शब्द - सीढ़ी शब्द अंत्याक्षरी, तुकबंदी, पहेलियाँ आदि) के द्वारा अर्थबोध

साधन :

- सामूहिक कार्य
- परियोजना कार्य

उदाहरण :

- बच्चों को किसी चित्र को दिखाकर चित्र में दिखाई दे रहे शब्दों की सूची बनाने को कहना।

SCERT TELANGANA

उदाहरण : यह सूची लिंग, वर्ग, क्रिया, संज्ञा शब्दों के आधार पर भी हो सकती है।

- अंत्याक्षरी द्वारा शब्द निर्माण

  उदाहरण : मछुआरा रास्ता ताकत .....

- तुकबंदी – हमारा तुम्हारा

  – इसका उसका किसका इत्यादि।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति – सृजनात्मक अभिव्यक्ति

परिचय :

- प्रायः देखा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी प्रकार की मानसिक योग्यता होती है। जिसके आधार पर वह लेखक, कलाकार, वैज्ञानिक, चित्रकार, संगीतज्ञ या नर्तकइत्यादि बनता है।
- किसी भी व्यक्ति विशेष की वह योग्यता जिसके द्वारा नवीन विचारों या वस्तुओं का उत्पादन या सृजन होता है, सृजनात्मकता कहलाती है। (जैसेः- कविता का सृजन, विधा का बदलना)
- क्रो व क्रो के अनुसार 'सृजनात्मकता भौतिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।
- स्किनर के अनुसार 'सृजनात्मक चिंतन वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है, नये परीक्षण करता है, नयी भविष्यवाणियाँ करता है और नये निष्कर्ष निकालता है।
- भाषा अधिगम प्रक्रिया में सृजनात्मकता चरम सीमा होती है। जिसकी अभिव्यक्ति मौखिक, लिखित, चित्रकारी, कार्टून, पत्र लेखन, घटना वर्णन इत्यादि के रूप में होती है।

उद्देश्य :

- विचारों को खुलकर अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करना। (विधा में होने चाहिए)
- स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना।
- चिंतन शक्ति को बढ़ाना।
- इच्छाओं के दमन पर रोक लगाना।
- रूढ़िवादी परंपराओं एवं विचारों के स्थान पर तर्क-वितर्क के आधार पर तथ्यों की खोज करना।
- बोझिल व गंभीर कार्यों में मनोविनोदी वातावरण का निर्माण करना।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति की संप्राप्तियाँ – कक्षावार :

- स्वयं बनाये गये चित्रों के नाम लिखते हैं।
- चित्र बनाकर रंग भरते हैं, चित्र का शीर्षक लिखते हैं।
- बालगीत अभिनय के साथ गाते हैं।
- बालगीतों का सृजन करते हैं।

SCERT TELANGANA

- कहानी की पंक्तियों को आगे बढ़ाते हैं।
- गीत या कविता का गायन करते हैं।
- संबंधित विषयों पर नारे या सूक्तियाँ एकत्रित करते हैं।
- गाँव के विभिन्न व्यवसायों के बारे में जानकारी देते हैं।
- कहानी, कविता, निबंध इत्यादि को पढ़कर अन्य विधा में परिवर्तित करते हैं।
- किसी भी विषय का विश्लेषण कर तथ्यों और आँकड़ों की सूची बनाते हैं।
- पोस्टर, संवाद, भाषण, परिचर्चा, घटना वर्णन, साक्षात्कार, यात्रा वर्णन की सुंदर अभिव्यक्ति अपने शब्दों में करते हैं।
- विभिन्न पत्र, करपत्र इत्यादि लिखते व बनाते हैं।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- भाषा कौशलों की कमी।
- शब्द भंडार की कमी होना।
- वर्तनी तथा वाक्य निर्माण की कठिनाइयों का सामना करना।
- व्याकरणपरक वाक्यों की संरचना का अभाव होना।
- परिवेश में हिंदी का अभाव होना।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति की संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- व्यक्तिपरक कार्य करवाना
- सामूहिक कार्य करवाना
- क्षेत्र निरीक्षण के द्वारा
- मनोरेखा चित्रण द्वारा
- भाषाई खेलों के द्वारा
- गीत गायन के द्वारा
- नाटकीकरण के द्वारा
- रोलप्ले के द्वारा
- संवादों के द्वारा
- ऑडियो-वीडियो के द्वारा
- भाषा-खेल (शब्द - सीढ़ी शब्द अंत्याक्षरी, तुकबंदी, पहेलियाँ आदि) के द्वारा अर्थबोध

SCERT TELANGANA

साधन :

- व्यक्तिपरक कार्य
- सामूहिक कार्य
- लिखित कार्य

उदाहरण :

- व्यक्तिपरक कार्य के अंतर्गत छात्रों को किसी विषय पर बातचीत कराना (एनेक्ट करवाना)
  जैसे : पेड़, आम (एनेक्ट)
  मैं पेड़ हूँ.....
  मैं छाया देता हूँ.....
- गीतगायन : गीत के लय को बदलकर गवाना।
- कहानी सृजन कराना इत्यादि।
- सामूहिक कार्यों के अंतर्गत छात्रों को समूह में बाँटकर कार्य देना।
  जैसे : क्षेत्र निरीक्षण - विभिन्न स्थानों का निरीक्षण कर सूची या रिपोर्ट तैयार करवाना।
  क्षेत्र पर्यटन - पर्यटन के दौरान समूहों को किसी स्थान या प्रदेश का दौरा करवाकर उसकी लिखित एवं मौखिक प्रस्तुति निबंध या लेख के रूप में करवाना।

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्ति - भाषा की बात (व्याकरण)

परिचय :

- भाषा की बात के अंतर्गत दो प्रकार के अभ्यास कराये जाते हैं। 1. शब्द भंडार और 2. भाषा की बात
- शब्द भंडार में शब्दों से जुड़ी भाषा की क्रियाएँ करायी जाती हैं और भाषा की बात में व्याकरण संबंधी अभ्यासों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। प्रायः मौखिक अथवा व्यावहारिक भाषा में व्याकरण के तत्वों पर अधिक बल नहीं दिया जाता है।
- व्याकरण सिखाने में भी दो बातों पर ध्यान दिया जाता है- 1. क्रियात्मक या व्यावहारिक और 2. सैद्धांतिक। सैद्धांतिक व्याकरण का संबंध रोजमर्रा के जीवन से नहीं होता है। यह एक प्रकार का ज्ञान है जो भाषा के छात्रों को जानना चाहिए।

उद्देश्य :

- भाषा की बात भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। इसका कार्य भाषा का दिशा निर्देशन करना है।
- व्याकरण के नियमों के ज्ञान के द्वारा बच्चों में मौलिक वाक्य संरचना का विकास करना है।
- शुद्ध भाषा बोलने व लिखने का अभ्यास करना है।

भाषा की बात की संप्राप्तियाँ - कक्षावार :

- आरंभिक कक्षाओं में गीतों के माध्यम से छात्र अनजाने ही भाषा सीखते हैं।
- भाषा की बारीकियों या व्यवस्था को समझते हैं तथा नये शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण के अतिरिक्त वचन और शब्दार्थ भी सीखते हैं।
- भाषा की बारीकियों या व्यवस्था का लिखित प्रयोग करते हैं, जैसे कविता के शब्दों को बदलकर लिखना अर्थ और लय को समझना आदि।
- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण और क्रिया विशेषण के प्रकारों को न केवल समझ सकते हैं बल्कि समय-समय पर भाषा में प्रयोग भी करते हैं। विरामचिह्न और काल के प्रकार भी समझते हैं।
- कारक, काल, वाच्य, उपसर्ग, प्रत्यय, वाक्य भेद, शब्द भेद का प्रयोग समझकर उसका प्रयोग करते हैं।
- संदर्भानुसार शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करते हैं।
- पर्यायवाची शब्द, भिन्नार्थ, शब्द-संक्षेप, शब्द विस्तार आदि लिखते हैं।
- शब्दांश का समुचित प्रयोग करते हैं।

SCERT TELANGANA

भाषा की बात की संप्राप्ति में आने वाली समस्याएँ :

- आरंभिक कक्षाओं में बालक तो गीत गा सकते हैं किंतु गीत में प्रयुक्त भाव एवं भाषा को समझ नहीं पाते हैं।
- बच्चों में यह मुख्य समस्या हो सकती है कि वे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि के ढेर सारे प्रकार को कम समय में याद नहीं रख पाते हैं।
- समास, संधि के प्रकारों के अतिरिक्त कारक, काल आदि की जटिल प्रक्रिया नहीं समझ पाते हैं।

भाषा की बात की संप्राप्ति के लिए व्यूह :

- पढ़े हुए अंश में से शब्द भंडार, मुहावरों के बारे में प्रश्न बनाने के लिए कहना
- बालकों को मुखरित होने की स्वतंत्रता देना
- व्याकरणांशों के लिए अधिक उदाहण, बच्चों से ही उदाहरण लेना
- भाषा के सरल विषय देना

साधन :

- व्यक्तिपरक कार्य
- सामूहिक कार्य
- मनोरेखा चित्रण
- शब्दकोश का प्रयोग

उदाहरण :

- बच्चों को दलों में विभाजित कर भाषाई क्षमताओं का विकास करने के अभ्यास कार्य देना।
- पढ़े या लिखे हुए अंश में से शब्द भंडार, मुहावरों के बारे में प्रश्न बनाने के लिए कहना।
- भाषा खेलों के द्वारा व्याकरण का अभ्यास कराना। जैसेः श्यामपट पर व्यक्ति का नाम, स्थान, वस्तु का नाम लिखकर उसके नीचे कक्षा के बच्चों से उचित शब्द लिखाना।

SCERT TELANGANA

विषयपरक समस्या समाधान

SCERT TELANGANA

छठवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
1. आम ले लो आम	उन्मुखीकरण : - चित्रों के नाम हिंदी में नहीं आते हैं किंतु बालक इन्हें अपनी मातृभाषा में जानते हैं। - मौखिक वाक्य संरचना में कठिनाई होती है। **सुनो-बोलो :** - अक्षरों का उच्चारण - विचारों की अभिव्यक्ति में विशेष कठिनाई। **लिखो :** - अक्षरों की आकृति बनाना। - मनपसंद चित्र का नाम लिखना।	- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा (चित्र, वीडियो, पावर पॉइंट आदि) के द्वारा दृश्य एवं श्रव्य कौशलों की अभिव्यक्ति कराना और हिंदी भाषा से परिचित कराना। - संज्ञा (नामवाले) और क्रिया (काम वाले) शब्दों के द्वारा वाक्य निर्माण कराना। - भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के लिए भाषा खेलों का आयोजन करना। - चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हुए प्रश्नों में क्या, क्यों, कहाँ, कैसे, कब का प्रयोग करना। - पात्र अभिनय द्वारा (रोलप्ले) - आई. सी. टी. साधनों के द्वारा बिना मात्रा वाले शब्द और मात्रा वाले शब्दों के चित्रों एवं उच्चारण स्पष्ट करना। उदाः नर, नार, नारा। - अक्षर या वर्ण के क्रमानुसार आकार लिखने की विधि समझना अनिवार्य है। (आई. सी. टी. डिजिटल कार्य) - अध्यापक के सहयोग द्वारा छात्र मनपसंद चित्र का नाम लिखना सीखेंगे।
2. हमारा गाँव	उन्मुखीकरण : - चित्रों के नाम हिंदी में नहीं आते हैं किंतु बालकों इन्हें अपनी मातृभाषा में जानते हैं। - मौखिक वाक्य संरचना में कठिनाई होती है।	- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा (चित्र, वीडियो, पावर पॉइंट आदि) के द्वारा दृश्य एवं श्रव्य कौशलों की अभिव्यक्ति कराना और हिंदी भाषा से परिचित कराना। - संज्ञा (नामवाले) और क्रिया (काम वाले) शब्दों के द्वारा वाक्य निर्माण कराना।

SCERT TELANGANA

छठवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
2. हमारा गाँव	**सुनो-बोलो :**	
	- अक्षरों का उच्चारण	- भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के लिए भाषा खेलों का आयोजन करना।
	- विचारों की अभिव्यक्ति में विशेष कठिनाई।	- इ चित्र ई चित्र
	- समीप ध्वनि वाले वर्णों के उच्चारण में कठिनाई।	- प्रश्नों के द्वारा छात्रों से कारण एवं निवारण पूछकर उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को सरल बनाना। - अपने गाँव का परिचय देने को कहना। - क्रियाकलाप द्वारा जैसे : समूह में वर्ण से बनने वाले शब्दों को बोला जाएगा। वर्ण : 'इ' - पहला बालक - इमली 'ई' - दूसरा बालक - ईख
	पढ़ो :	
	- अक्षरों को जोड़कर पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करना। - मात्राओं के साथ पढ़ना।	- क + म + ल - कमल, क + मा + ल - कमाल, क + म + ली - कमली। उपरोक्त उदाहरण द्वारा पढ़ने और उच्चारण की कठिनाई को सरल कर सकते हैं।
	लिखो :	
	- अक्षरों की आकृति बनाना। - नया शब्द निर्माण करना।	- वर्ण के क्रमानुसार आकार बनाने की विधि समझाना अनिवार्य है। (आई. सी. टी. उपकरण या श्यामपट का प्रयोग) क्रियाकलाप : पाठ में आये वर्णों से संबंधित चित्रों या वस्तुओं को दिखाकर शब्द लिखने को कहना।
सूचना : रेलवे स्टेशन से बाल दिवस पाठ तक इसी प्रकार हर काठिन्य निवारण अंश का स्पष्टीकरण किया जाएगा।		

SCERT TELANGANA

छठवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
9. खुशियों की दुनिया	उन्मुखीकरण : - ठठेरे के हाथ में हथौड़ी का चित्र। इन शब्दों के अर्थ हिंदी में बालक नहीं जानता। **सुनो-बोलो :** - अक्षरों का उच्चारण (अल्पप्राण और महाप्राण) एक जैसा ही उच्चारण इनका बच्चे करते हैं। - घुमड़, गरजे, जगमग, जुगनू, झरना, थिरक इन शब्दों के अर्थ नहीं जानता। - विचारों की अभिव्यक्ति में विशेष कठिनाई। **पढ़ो :**	- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा बालकों को इन शब्दों के अर्थ स्पष्ट किये जाएँगे। - क्रियाकलाप : जगमग झरना ज झ श्यामपट पर अध्यापक द्वारा लिखा जाएगा। - पहला आदेश- शिक्षक द्वारा - बच्चो श्यामपट पर लिखे शब्द और उन शब्दों से संबंधित अक्षर बोलिए। - दूसरा आदेश- शिक्षक द्वारा - अब 'ज' अक्षर श्यामपट के किस ओर है और 'झ' किस ओर है, बोलिए। 'ज' अक्षर बाईं ओर 'झ' अक्षर दाईं ओर लिखा गया है। - तीसरा आदेश शिक्षक द्वारा - अब आपको अक्षर का उच्चारण सुनना है और हाथ उठाना है। जब आप 'ज' अक्षर सुनेंगे तो बायां हाथ उठाएँगे और 'झ' अक्षर सुनेंगे तो दायाँ हाथ उठाएँगे। (आँख बंद कर उच्चारण के अनुसार हाथ उठाएँगे।) - आई. सी. टी. उपकरणों के द्वारा नये शब्दों से परिचित कराएँगे। - अध्यापक स्पष्ट उच्चारण के द्वारा अंतर बताएँ।
10. चुक्की और जब्बार	- अंतर समझना गड़-गड़ - डम-डम **लिखो :** - चित्र देखकर विचार लिखना।	- मनोरेखा चित्रण के द्वारा विषय को बोधगम्य और सरल बनाना। उदा : 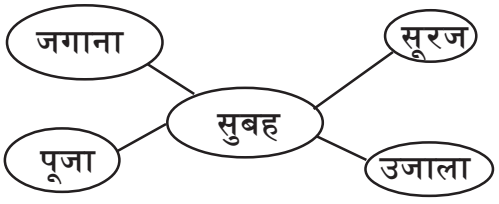

SCERT TELANGANA

छठवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
11. उद्यान	उन्मुखीकरण : - शब्द : फव्वारा, माली, गड्ढे, शोभा **पढ़ो और समझो :** - र और र् की मात्रा का प्रयोग **लिखो :** - अक्षरों की आकृति बनाना। - मनपसंद चित्र का नाम लिखना।	- आई. सी. टी. साधनों के द्वारा इन शब्दों के अर्थ समझाया जाएगा। - अध्यापक अनेक उदाहरण देते हुए इस विषय को समझाएँगे। - मनोरेखा चित्रण के द्वारा विषय को बच्चों के बोधगम्य एवं सरल बनाना। उदा : 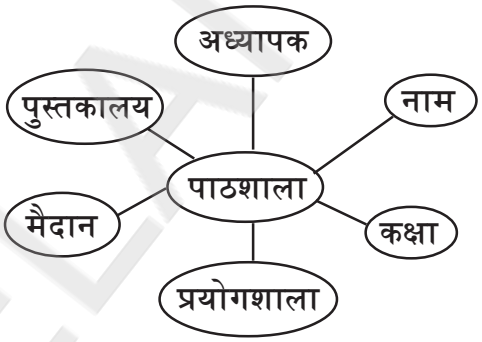
12. बच्चे चले क्रिकेट खेलने	**लिखो :** लिखो के प्रश्न - खिलाड़ियों के गुण - मेरे गुण	- अध्यापक प्रश्नोत्तर विधि द्वारा बच्चों को जानकारी दे सकते हैं।

SCERT TELANGANA

सातवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
1. मन करता है	उन्मुखीकरण : - मन करता है चंदा बनकर सब तारों पर अकड़ दिखाऊँ। - मीठे-मीठे बोल - चरखी लिखो : - पतंग के बारे में दो वाक्य लिखने में कठिनाई भाषा की बात : - ऊँ - मनपसंद चित्र का नाम लिखना।	रोल प्ले, संबंधित वीडियो के द्वारा - तुलनात्मक रोल प्ले या वीडियो उदा : कृपया, मुझे आगे बैठने दो। चल हट। बैठने दे। - चित्र, मॉडल, बच्चों द्वारा प्रायोगिक क्रिया करवाइए। - मनोरेखा चित्रण 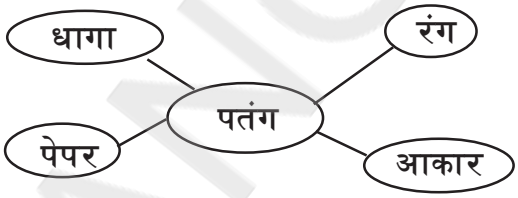 - उदाहरण : राजु पुस्तक पढ़। रामू - अध्यापिका जी ! मैं पढ़ूँ। बालक (दीदी से) - दीदी ! मुझे पढ़ना नहीं आ रहा है। दीदी (बालक से) - क्या मैं पढ़ाऊँ?
2. सच्चा दोस्त	- तने - वचन	- चित्र, चार्ट, श्यामपट पर चित्र उतारकर। - वचन का उदाहरण एक पेड़ - अनेक पेड़ मेरे घर या पाठशाला में आम का पेड़ है। रामू काका के बगीचे में आम के अनेक पेड़ है। बच्चे पेड़ों पर से आम तोड़ते है।
3. हिंदी दिवस	- हार्दिक बधाई	- उदाहरण देते हुए शुभकामनाएँ, धन्यवाद, कृपया आदि के उपयोग बताना। - पाठशाला ने कबड्डी में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। हम सबकी ओर से कबड्डी टीम को हार्दिक बधाई।

SCERT TELANGANA

सातवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
4. अपना प्यारा भारत देश	- न्यारा - जग - सिख, इसाई	- उदाहरण : एक ही रंग व प्रकार के फूलों के साथ एक अन्य रंग व प्रकार का फल बनाना। - तुलनात्मक चित्र (जग का) - तुलनात्मक चित्र (विश्व के मानचित्र का)
5. आसमान गिरा	भागते समय खरगोश ने क्या सोचा होगा?	- ऐसी ही स्थिति बच्चों से तैयार करवाकर उस पर उनसे कार्य करवाना।
6. छुट्टी पत्र	सृजनात्मक अभिव्यक्ति : - यदि मेधा दीदी के विवाह की घटनाएँ डायरी में लिखती, तो क्या लिखती? सोचकर लिखो। - नया शब्द निर्माण करना।	- फ्लो चार्ट के द्वारा विवाह में आयोजित किये जाने वाले सामान्य कार्यक्रम (स्थानीय प्रचलित पद्धति के आधार पर) जैसे : दुल्हन बनाना ↓ मेहंदी ↓ संगीत ↓ शादी ↓ व्रत
7. चारमीनार	- इमारत - आबाद - नक्काशी - बेमिसाल - हैदराबाद के बारे में तुम क्या जानते हो? - ऐतिहासिक इमारत - चारमीनार का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।	- चित्र, स्थानीय कोई इमारत का नाम बतलाकर। - एनिमेटेड वीडियो बच्चों से कोई क्रियाकलाप। - चित्र - अर्जुन की तीरंदाज़ी बेमिसाल थी। अन्य उदाहरण - स्थानीय स्थान को आधार बनाकर पहले किसी एक स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए। - ऐतिहासिकता के बारे में चर्चा - किसी एक स्थान के वर्णन के लिए शब्द संकेत

SCERT TELANGANA

सातवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
8. हमारा त्यौहार	- त्यौहार क्यों मनाते हैं? - सर्वनाम - अपने मनपसंद किसी त्यौहार की शुभकामनाएँ देते हुए छोटा सा एस. एम. एस. बनाइए।	- मनोरेखा चित्रण - उदाहरण यह, ये, वह, वे, मैं, हम, तू, तुम आप आदि। - दीपावली की हार्दिक शुभाकामनाएँ।
9. गुसाडी	- वेशभूषा - पगड़ी	- बच्चों के द्वारा अभिनय, भारत के विभिन्न लोगों की वेशभूषा। (वीडियो द्वारा) - चित्र, मॉडल
10. कबीर के दोहे	- परलै	- शुद्ध रूप - 'प्रलय'। वीडियो के द्वारा दिखाएँ।
12. आत्मविश्वास	- महसूस - रंगबिरंगी - कॉपी	- वीडियो दिखाकर बच्चों से क्रियाकलाप करवायें। - तितली का एनिमेशन - 'ँ' का प्रयोग विभिन्न उदाहरणों के द्वारा

SCERT TELANGANA

आठवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
1. हम होंगे कामयाब	उन्मुखीकरण : - चित्र पठन	- उन्मुखीकरण चित्र को देखने पर आपको विश्व का मानचित्र दिखायी देता है। विश्वभर में बच्चे खेलना-कूदना, पढ़ना-लिखना पसंद करते हैं। यही उनका स्वभाव भी है। यहाँ बच्चे विश्वास के साथ बातचीत कर रहे हैं। विश्वास के साथ पढ़-लिखकर, निडर होकर आगे बढ़ने पर ही बच्चे कामयाब होते हैं।
	मूल पाठ : - पाठ में 'ओर' शब्द का अर्थ समझने में बच्चों को कठिनाई होती है।	- बच्चों को 'ओर' शब्द का अर्थ समझाने के लिए 'और' शब्द को भी लें। इन दोनों शब्दों का अलग-अलग वाक्य प्रयोग करवायें। जैसे : लड़की पाठशाला की ओर जा रही है। लड़का और लड़की खेल रही हैं। पहले वाक्य में 'ओर' शब्द का अर्थ तरफ, दिशा को सूचित करता है। जबकि दूसरे वाक्य में 'और' शब्द का अर्थ तथा, एवं है।
5. धरती की आँखें	उन्मुखीकरण चित्र : - टिमटिमाना, चमकना	- इन शब्दों का संबंध प्रकाश से है। जैसः टिमटिमाना, चमकना शब्दों का प्रयोग तारों के लिए किया गया है।
6. दिल्ली से पत्र	जैसे शब्दों संबंध किससे है? मूल पाठ : - छोले-भटूरे	- इसे उत्तर भारत में बड़े चाव से खाया जाता है। यहाँ छोले का अर्थ काबुली चने से है, जबकि भटूरे का अर्थ मैदे और सूजी की पूड़ी से है।
8. चावल के दाने	उन्मुखीकरण : - चित्र पठन	- यह चित्र हास्यपुट का एक उदाहरण है। घास बैलगाड़ी में रखा जा सकता है। किंतु बैलगाड़ी वाहक उसे अपने सिर पर उठाये खड़ा है। इस कारण हास्य उत्पन्न होता है। तेनाली रामकृष्ण की अत्यधिक कहानियों में इसी तरह का हास्य पुट देखने को मिलता है।

SCERT TELANGANA

नवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
1. जिस देश में गंगा बहती है	उन्मुखीकरण : - चित्र पठन	- चित्र में दिये गये तीन रंगों- केसरिया, सफ़ेद और हरा रंग क्रमशः त्याग, शांति और समृद्धि के प्रतीक हैं। कबूतर शांति प्रसारक का सूचक है। सूर्य राष्ट्र के भाग्योदय का सूचक है।
	भाषा की बात : - (अ)	पाठ्य पुस्तक में 'वह + में = उसमें' का उदाहरण दिया गया है। इसी तरह के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं- मैं + को = मुझे तू + को = तुझे मैं + का = मेरा तू + का = तेरा मैं + की = मेरी तू + की = तेरी मैं + के = मेरे तू + के = तेरे यह + ने = इसने ये + ने = इन्होंने वह + ने = उसने ये + ने = उन्होंने वह + ने = उसने ये + ने = इन्होंने
	- (आ)	पाठ्य पुस्तक में 'जान से प्यारा होना' मुहावरा दिया गया है। इसी तरह 'जान' शब्द से बनने वाले मुहावरों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है- जान में जान आना = निश्चिंत होना जान से प्यारा होना = सबसे प्रिय होना जान की बाज़ी लगाना = जोखिम उठाना जान पर खेल जाना = जोखिम उठाना
2. गाने वाली चिड़िया	अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया : - (ई)	- पढ़ना भी एक कला है। केवल किसी सामग्री को पढ़ना वह पूरी तरह से पढ़ना नहीं कहलाता है। वह तो केवल संकेतों को पहचानना मात्र है। पढ़ने का एक मनोवैज्ञानिक ढंग होता है। इसमें पहले संकेतों पहचनाना, उसे समझना और उसके अनुरूप अभिव्यक्ति करना पढ़ना कहलाता है। पढ़ना कौशल के माध्यम से बच्चों में संज्ञानात्मक, तुलनात्मक, विचारात्मक, समस्यात्मक और सृजनात्मक

SCERT TELANGANA

नवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
2. गाने वाली चिड़िया	अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया : – (ई)	उदाहरण – भारत सरकार ने वन्य जीवों के संरक्षण के लिए सन् 1972 में 'वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम 1972' बनाकर सभी राज्यों में वन्य प्राणियों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया है एवं वन्य जीवों के स्वच्छंद विचरण के लिए देश के विभिन्न भागों में 69 राष्ट्रीय उद्यानों, 399 अभयारण्यों एवं 35 प्राणी उद्यानों का विशेष निर्माण किया गया है। इसके साथ ही दुर्लभ प्रजाति के वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए *प्रोजेक्ट टाइगर* जैसी योजनाएँ आरंभ की गयी हैं। प्रश्न 1. यहाँ पर बताये गए अधिनियम का नाम क्या है? प्रश्न 2. राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों की तुलना में किनकी संख्या अधिक है? प्रश्न 3. इस अनुच्छेद में दुर्लभ प्रजाति पर विशेष बल दिया गया है। क्यों? प्रश्न 4. जीवों की सुरक्षा में किस प्रकार की समस्या आ रही है? एक उदाहरण लिखिए। प्रश्न 5. इस अनुच्छेद के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। (सूचनाः अनुच्छेद और उससे जुड़े प्रश्न दोनों भी छात्रों के स्तरानुकूल होने चाहिए।)
3. बदलें अपनी सोच	मूल पाठ : पृष्ठ संख्याः बारह, अनुच्छेदः दो, पंक्तिः चार-पाँच (प्रशांत महासागर के.....रहा है।)	– समुद्रों में व्यर्थ पदार्थों के फेंकने से अथवा आवश्यकता से अधिक समुद्र का शोषण करने से उसमें निकलने वाले पदार्थों से पानी का स्तर दबाव के कारण ऊपर की ओर उठता है। इसीलिए यहाँ पर प्रशांत महासागर के पानी का स्तर बढ़ने की बात कही गयी है।
उपवाचकः तारे ज़मीन पर	पात्र परिचय :	– **फिल्म में पात्र का नाम** — **असली नाम** ईशान अवस्थी — दर्शील सफ़ारी योहान अवस्थी — सचेत इंजीनियर

नवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
उपवाचकः तारे ज़मीन पर	पात्र परिचय :	नंदकिशोर अवस्थी — विपिन शर्मा माया अवस्थी — टिस्का चोपड़ा रमाशंकर निकुंभ — आमिर खान
4. प्रकृति की सीख	मूल पाठ : पंक्ति संख्याः आठ (मीठे-मीठे मृदुल उमंग)	कवि कहना चाहता है कि तरंगें (लहरें) तरल (द्रव्य) होने के कारण उनमें मृदुलता (कोमलता) होती है। यह मृदुलता आभास करने में मीठी लगती है। इसीलिए हमारी उमंगें (इच्छाएँ) मीठे-मीठे और मृदुल होनी चाहिए। इन्हीं उमंगों को अपने मन में रखना चाहिए।
5. फुटबॉल	उन्मुखीकरण : - चित्र पठन	- इस चित्र में दो खिलाड़ी हैं। जो टेबल टेनिस खेल में भाग ले चुके हैं। इसमें एक विजयी है जो गले में पदक पहने और हाथ में टेबल टेनिस का बैट पकड़े दिखायी दे रहा है। जबकि दूसरा खिलाड़ी उसी के हाथों हारा है। वे एक दूसरे के गले लगकर खेल भावना का उत्तम उदाहरण दिखा रहे हैं। इस चित्र से यह सीखने को मिलता है कि खेल में हार-जीत तो लगी रहती है। इन सबसे ऊँचा उठकर खेल-भावना का प्रदर्शन करने वाला ही सही व्यक्ति है।
6. बेटी के नाम पत्र	मूल पाठ : अनुच्छेदः दो (हम तो सभी काम दिन के उजाले में करते हैं।)	यहाँ इस पंक्ति में 'दिन के उजाले' में शब्दों का प्रयोग 'पारदर्शिता' के लिए किया गया है। अर्थात् हमारे सभी कामों में पारदर्शिता होती है।
उपवाचकः तारे ज़मीन पर	पात्र परिचय :	- **पाठ में आया नाम — सम्मक्का से संबंध** मेडराजू — पिता पगिडिद्दा राजू — पति सारलम्मा (सारक्का) — पुत्री नागुलम्मा — पुत्री जंपन्ना — पुत्र गोविंदराजू (सारक्का का पति) — दामाद

नवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
7. मेरा जीवन	मूल पाठ : पंक्ति संख्याः आठ (है स्वर्णसूत्र से वलयित .....के धन।)	यहाँ कवयित्री असफलताओं से निराश नहीं होती है। वे असफलता को भी धन (मूल्यवान) मानती हैं। असफलता ऐसा धन है जो सोने के सूत्र (स्वर्णसूत्र) से बंधा हुआ है। सोने जैसे महंगे धातु से बंधी कोई भी वस्तु सामान्य नहीं हो सकती है। जिस तरह से सोने से बंधी कोई वस्तु उसके (सोने) के कारण चमकती है, ठीक उसी तरह असफलता भी चमकती है। उसकी चमक जीवन की गलतियों पर दृष्टिपात कराती है। इससे आगे चलकर सुधरने और सुधारने का अवसर मिलता है।
9. रमज़ान	भाषा की बात : - (इ) महीनों के नाम	यहाँ इस्लामी कैलेंडर के माह के नाम दिये गये हैं। उसी तरह हिंदू कैलेंडर के माह के नाम इस प्रकार हैं- चैत्र वैशाख ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण भाद्रपद आश्विन कार्तिक मार्गशीर्ष पौ माघ फाल्गुण

SCERT TELANGANA

दसवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
1. बरसते बादल	**कवि परिचय :**	
	- सुमित्रानंदन पंत	- सुमित्रानंदन पंत का जन्म अल्मोड़ा जिले के कौसानी नामक गाँव में हुआ था।
	मूल पाठ :	
	- थम-थम दिन के.....मन के।	- वर्षा के कारण दिन में अंधकार छा जाता है। तरह-तरह के सपने मन जगने लगते हैं।
	- दादुर....झन-झन	- यहाँ 'झिल्ली का' अर्थ है- पतले चर्म का जाला। मेंढ़क के फेफड़े के बाहरी भाग के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। मेंढ़क जब टर-टर करते हैं तब उनके गले के पास 'झिल्ली' झनझनाती है। इसी कारण टर-टर की आवाज़ आती है।
	- उड़ते सोनबलाक....क्रंदन	- यहाँ 'बलाक' का अर्थ- 'बगुला' है। 'सोन' का अर्थ है- सुनहरा। 'आर्द्र सुख' का अर्थ है- सुख में भीगकर। यहाँ 'क्रंदन' का अर्थ रोना नहीं है। बल्कि चिल्लाना है। अर्थात् सावन की वर्षा देखकर सुनहरे बगुले सुख में भीगकर खुशी से चिल्लाते हुए उड़ने लगते हैं।
2. ईदगाह	**मूल पाठ :**	
	- हैजे की भेंट होना	- हैजा बीमारी के कारण मृत्यु होना
	- पीली पड़ती गयी	- किसी बीमारी के कारण मर जाना
	- परलोक सिधारना	- मृत्यु होना
	- तीन कोस	- 'कोस' भारतीय माप में दूरी के लिए प्रयोग किया जाता है। एक कोस लगभग तीन किलोमीटर के बराबर होता है।
	- भिश्ती	- 'भिश्ती' पानी भरने वाले मजदूर को कहते हैं।
	- रेवड़िया या रेवड़ी	- तिल और गुड के मेल से बनी मिठाई रेवड़ी कहलाती है।
3. माँ मुझे आने दे	**मूल पाठ :**	
	- सन्नाटा बिखरना	- उदासी दूर हो जाना
	- उद्दंडता	- शरारत
	- पोंछ दूँगी अँधेरा	- दुख दूर करना
	- 'माथे की सिलवटों में सिमटा है'	- जब हम चिंता करते हैं तो माथे पर बल पड़ जाते हैं। अर्थात् माथे पर लकीरें दिखायी देती हैं। अतः यहाँ माथे की सिलवटों से मतलब है- चिंता की रेखाएँ। सिलवट = मोड़

SCERT TELANGANA

दसवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
3. माँ मुझे आने दे	- अकड़ीला मिज़ाज - 'आसमान के अक्स' - नाविकों के किस्से	- घमंडी स्वभाव - अक्स = छाया - साहस की कहानियाँ
4. कण-कण का अधिकारी	पाठ की पृष्ठभूमि :	- महाभारत युद्ध के उपरांत यद्यपि पांडवों को विजय प्राप्त हुई थी किंतु बड़ी मात्रा में नर संहार से विचलित युधिष्ठिर भीष्म पितामह के सम्मुख संन्यास ग्रहण करने की बात प्रकट करते हैं तब भीष्म पितामह उन्हें जो उपदेश देते हैं, दिनकर उसे 'कुरुक्षेत्र' शीर्षकीय रचना में काव्यबद्ध करते हैं। प्रस्तुत कविता उसी का भाग है।
5. लोकगीत	मूल पाठ : - लोच - ढोलक - दक्कन - छोटा नागपुर - गोंड-खांड, भील - मैथिल-कोकिल विद्यापति.....अपने	 - जिसमें लचक हो, जो परिवर्तन योग्य हो - ऐसा वाद्य यंत्र जिसे दोनों हाथों से बजाया जाता है - दक्षिणी क्षेत्र - पूर्वी भारत का पठार का क्षेत्र जैसे : झारखंड, ओड़िशा और पश्चिम बंगाल के कुछ भाग - जनजाति लोग अथवा वर्ग - मैथिली भाषा में विद्यापति प्रसिद्ध कवि और गीतकार हुए हैं। उसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में जो अच्छे कवि या गीतकार होते हैं उन्हें विद्यापति कहा गया है।
6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	मूल पाठ : - विश्व हिंदी दिवस - उद्दंडता	 - पहला विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी 1975 को नागपुर में हुआ था। इसी दिन को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है।
हम सब एक हैं (उपवाचक)	मूल पाठ : - अंबेड्कर के कुछ ग्रंथ	 - कैस्ट्स इन इंडिया, जनता, बहिष्कृत भारत, थॉट्स ऑन पार्टिशन, स्टेट एंड मैनारिटीस, हू वर द शूद्रास, बुद्ध ऑर कार्ल मार्क्स आदि।
7. भक्ति पद	- रैदास की कविता की विशेषता	- इस कविता के द्वारा रैदास की भक्ति की रीति की जानकारी मिलती है। रैदास ने भक्त और ईश्वर को अभिन्न अंग माना है। कवि के अनुसार भक्त के कारण

SCERT TELANGANA

दसवीं कक्षा

पाठ का नाम	काठिन्य अंश	स्पष्टीकरण / अतिरिक्त जानकारी
7. भक्ति पद		ही ईश्वर का महत्व सिद्ध होता है। जैसे ईश्वर मोती है तोभक्त धागा और ईश्वर दीप है तो भक्त बाती।
8. स्वराज्य की नींव	**पाठ का स्पष्टीकरण :**	- यह एक ऐतिहासिक एकांकी है। ऐतिहासिक साहित्य में कुछ पात्र, घटनाएँ या स्थान ऐतिहासिक होते हैं। कुछ पात्र, घटनाएँ या स्थान काल्पनिक होते हैं। - आज़ादी की लड़ाई में लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ों से संघर्ष करती है। आज़ादी की लड़ाई आरंभ करके नींव का पत्थर बन जाती है और आज़ादी की लड़ाई के भवन के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है।
9. दक्षिणी गंगा गोदावरी	**मूल पाठ :** - अथाह - उधेड़बुन - धूलि-धूसरित मटमैले - स्निग्ध - सबको तूने ही स्तन्य पान कराया है	 - बहुत गहराई - उलझन - धूल से भरे, मिट्टी का मैल लिए हुए - जिसमें प्रेम एवं स्नेह हो - पोषण किया
10. नीति दोहे	**मूल पाठ :** - नर की अरु..... .....ऊँचौ होइ।।	- नर और नल के जल की गति में समानता होती है। नल का जल जितना नीचे जाता है, उसे उतना ही ऊपर उठने की संभावना होती है। उसी प्रकार मनुष्य में जितनी विनम्रता होती है वह उतनी महानता प्राप्त कर सकता है।
11. जल ही जीवन है	**मूल पाठ :** - प्रकाश वर्ष	- एक वर्ष में प्रकाश जितनी दूरी तक पहुँचती है उतनी दूरी को प्रकाश वर्ष कहते हैं।
12. धरती के सवाल – अंतरिक्ष के जवाब	**ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का परिचय :**	- ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल फ़क़ीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम है। इनका जन्म 15 अक्तूबर 1931 को तमिलनाडु स्थित रामेश्वरम के धनुषकोड़ी में हुआ। इनके पिता का नाम जैनुलाबुद्दीन तथा माता का नाम आशियाम्मा है। वे भारत के महान वैज्ञानिकों में से एक हैं। भारत सरकार ने इनकी सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1999 में 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया। वे वर्ष 2000 से 2007 के बीच भारत के राष्ट्रपति भी रहे। इनका निधन 27 जुलाई 2015 को हुआ।

SCERT TELANGANA

मूल्यांकन

I. रचनात्मक आकलन

II. सारांशात्मक आकलन

SCERT TELANGANA

रचनात्मक आकलन

I. पुस्तक पठन - समीक्षा

रचनात्मक आकलन का सबसे पहला अंश है- पुस्तक पठन-समीक्षा। उसके निर्वहण के लिए अध्यापक जिन साधनों का प्रयोग कर सकते हैं, वे हैं- विभिन्न कहानियों की पुस्तकें, बाल साहित्य, समाचार-पत्र आदि। गत वर्ष तेलंगाणा राज्य के सभी विद्यालयों में पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया की परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसके अंतर्गत बच्चों को विभिन्न कहानियों की पुस्तकें, बाल साहित्य या समाचार पत्र के किसी अंश को पढ़कर, पढ़े हुए अंश की समीक्षा लिखकर, कक्षा में मौखिक रूप से प्रस्तुतीकरण करना था। अंकों का विभाजन लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति पर निर्भर था। किंतु इस अंश (पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया) का आयोजन अनेक विद्यालयों में इसके प्रारूप के अनुसार नहीं हुआ जिसके तथ्य हमें इस रूप में दृष्टिगत हुए:-

1. पुस्तक पठन का अर्थ पाठ्य पुस्तक के वाचन के रूप में लिया गया बच्चों को पाठ्य पुस्तक का वाचन करवाकर अंक प्रदान किये गये।
2. बच्चों को कहानियों की पुस्तकें पढ़ने के लिए नहीं दी गयी। केवल कक्षा में एक कहानी सुनाकर या लिखवाकर उसके लिए अंक दिये गये।
3. बच्चों से समीक्षा के बजाय पूरी की पूरी कहानी लिखवायी गयी।
4. पुस्तक के विवरण को अधिक महत्व दिया गया।
5. समीक्षा लेखन की अवहेलना की गयी।
6. मौखिक प्रस्तुतीकरण का आयोजन नहीं किया गया।

पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया का आयोजन ठीक ढंग से न होने के परिणाम ये रहें-

1. छात्र पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ने से वंचित रहें।
2. इसका उद्देश्य छात्रों में अन्य पुस्तकें पढ़कर उसकी समीक्षा करने की दक्षता का विकास है किंतु छात्र इससे लाभान्वित नहीं हो सके।
3. प्रमुख रूप से छात्र पुस्तक-पठन-प्रतिक्रिया के प्रारूप से अनभिज्ञ रहें।
4. क्षमता के अनुसार बच्चों का आकलन नहीं हो पाया।
5. एक ही कहानी के लिए सभी छात्रों को समान अंक प्रदान किये गये।
6. मौखिक प्रस्तुतीकरण करने वाले बच्चों में अंतर न रखकर सभी को समान अंक दिये गये।
7. समीक्षा लेखन को गौण बना दिया गया और केवल कहानी लिखने पर भी अंक दिये गये।

इसके कारण पुस्तक का पठन कर लिखित और मौखिक प्रतिक्रिया करने वाले छात्रों और न करने वाले छात्रों में कोई अंतर न रहा।

इस प्रकार पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया का जो वास्तविक उद्देश्य था वह पूर्ण नहीं हो सका। किंतु इस वर्ष यदि हम चाहे तो इसके प्रक्रियाबद्ध तरीके से आयोजन के लिए प्रयास कर सकते हैं। जैसे:-

1. हर विद्यालय के पुस्तकालय में कहानियों की पुस्तकें और बाल साहित्य से संबंधित कहानियों की पुस्तकें पढ़ने के लिए दें।

2. पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया का अर्थ और प्रस्तुतीकरण का तरीका पूरी तरह से समझ लें।
3. केवल पुस्तकों का या कोई अनुच्छेद का वाचन न करवायें बल्कि छात्रों को विभिन्न कहानियों की पुस्तकें पढ़ने के लिए दें।
4. पुस्तकों के पठन के पश्चात, उनके मनपसंद अंश की समीक्षा एक निश्चित प्रारूप में करवाई जाए। जैसेः- (I) पढ़ी हुई पुस्तक का विवरण (II) उद्देश्य (III) पढ़े हुए अंश या कहानी का संक्षिप्त विवरण, समीक्षा (IV) निष्कर्ष या सीख (V) मौखिक प्रस्तुतीकरण (कक्षा में) के अनुसार करवायें।

छात्रों को निम्न लिखित आधार पर अंक प्रदान करें।

(I) पुस्तक का विवरण लिखने पर	- 1
(II) पढ़े हुए अंश का विवरण, समीक्षा लेखन और निष्कर्ष लिखने पर	- 2
(III) उपर्युक्त अंशों के मौखिक प्रस्तुतीकरण पर	- 2
कुल	**5**

पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया - नमूना

(I) **पढ़ी हुई पुस्तक का विवरण**

पुस्तक का नाम	:	पंचतंत्र की कहानियाँ
- लेखक	:	विष्णुशर्मा
- कहानी का नाम	:	बंदर और मगरमच्छ
विषय	:	पंचतंत्र की कहानियाँ, पुस्तक में विभिन्न विषयों से संबंधित नीतिप्रद कहानियाँ हैं। इसमें से 'बंदर और मगरमच्छ' एक है। इसका मुख्य विषय है- कठिन परिस्थितियों या कठिनाई के समय धैर्य और बुद्धिमानी का प्रदर्शन।

(II) **कहानी का उद्देश्य** : बाल मनोरंजन व नीति

(III) **पढ़े हुए अंश का विवरण, समीक्षा लेखन** :

'बंदर और मगरमच्छ' की यह कहानी मुझे बहुत पसंद आयी। इसमें बंदर के धैर्य, साहस और बुद्धिमता का परिचय मिलता है। बंदर का विपदा के समय सूझ-बूझ से समस्या का निवारण करना प्रेरणादायक है।

पात्र स्वभावः बंदर को बुद्धिमान, मगरमच्छ को मूर्ख और मगरमच्छ की पत्नी को लालची प्रवृत्ति के रूप में दर्शाया गया है। कहानी में क्रमबद्धता है और लेखक ने कहानी को कहीं भी कमजोर पड़ने नहीं दिया है। कहानी के अंत तक पाठकों में जिज्ञासा बनी रहती है

SCERT TELANGANA

कि आगे क्या होगा? संवाद छोटे सरल और स्पष्ट है। भाषा शैली सरल है। लेखक कहानी भाषा शैली के माध्यम से नैतिकता और सामाजिकता के जिस मूल्य का विकास करना चाहते थे उसमें वे पूर्ण रूप से सफल रहें।

(IV) निष्कर्ष या सीख : (अ) इस कहानी से मैंने विपत्ति के समय धैर्य, साहस और बुद्धिमानी के साथ काम करने के बारे में सीखा है।
(आ) लालच करना बुरी बात है। लालच का परिणाम सदा बुरा होता है।

(V) प्रस्तुतीकरण : (दिनांक.....) को मैंने कक्षा के समक्ष 'बंदर और मगरमच्छ' की कहानी का मौखिक प्रस्तुतीकरण किया।

नोट : समीक्षा का मौखिक प्रस्तुतीकरण करने पर ही 'प्रस्तुतीकरण' के अंक दिये जाएँ।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रक्रिया के आधार पर पुस्तक पठन प्रतिक्रिया के अंश का आयोजन करना चाहिए।

सूचनाः-

1. द्वितीय भाषा आठवीं से लेकर दसवीं तक की कक्षाओं के लिए पुस्तक पठन प्रतिक्रिया का प्रारूप यही होगा।
2. द्वितीय भाषा सातवीं कक्षा के लिए पुस्तक पठन प्रतिक्रिया का प्रारूप थोड़ा सरल होगा। इसमें कोई भी मनपसंद कहानी पढ़कर उसके बारे में लिखना उसका मौखिक प्रस्तुतीकरण करना पर्याप्त है।
3. द्वितीय भाषा छठवीं कक्षा में पुस्तक पठन - समीक्षा के स्थान पर 'सहभागिता प्रतिक्रिया' (जैसेः किसी चित्र पर बातचीत करवाना) अंश का आकलन किया जाएगा। इसके अंतर्गत बच्चों की मौखिक प्रतिक्रिया तथा अध्यापक और सहपाठियों के साथ उनकी सहभागिता के आधार पर अंक प्रदान किये जायेंगे।

II. लिखित कार्य

रचनात्मक आकलन का दूसरा अंश है- लिखित कार्य। इसके लिए अध्यापक को चाहिए कि वह हर पाठ के पीछे के अभ्यास बच्चों से ही करवायें। अभ्यासों को करवाने से पहले उन पर कक्षा में चर्चा अवश्य करें। फिर बच्चों से स्वलेखन करवायें। पाठ के पीछे के अभ्यासों के साथ-साथ स्वरचना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अतिरिक्त प्रश्न करवायें। गाइड या क्वश्चन बैंक का सहारा बिल्कुल न लें और न ही बच्चों को लेने दें।

इससे पहले विद्यालयों में जो लिखित कार्य करवाकर अंक प्रदान किये गये वे न्यायसंगत दृष्टिगत नहीं हुए, जिसके तथ्य इस प्रकार दिखायी दिये-

1. लिखित कार्य का अर्थ अनुच्छेद लेखन से लिया गया। केवल कुछ अंश लिखवाकर या

अनुच्छेद लेखन करवाकर अंक प्रदान किये गये।

2. अभ्यास कार्यों को करवाते समय गाइड्स का सहारा लिया गया।
3. स्वरचना पर बल नहीं दिया गया।
4. पाठ के पीछे के अभ्यास ही करवाये गये। अतिरिक्त प्रश्न नहीं लिखवाये गये।
5. बच्चों के द्वारा लिखे गये उत्तरों में किसी भी प्रकार की विविधता नहीं पायी गयी। इसके परिणाम ये हुए कि-
    - बच्चे स्वलेखन करने में पीछे रह गये।
    - भावों को प्रकट करने का अवसर नहीं मिला।
    - गाइड या क्वश्चन बैंक का प्रयोग कम नहीं हुआ।
    - बच्चों की योग्यता के अनुसार आकलन नहीं हो सका। स्वलेखन करने वाले बच्चों और गाइड का प्रयोग करने वाले बच्चों को समान अंक प्राप्त हुए।

उपर्युक्त समस्याओं के निवारण के लिए इनका पालन किया जा सकता है-

- लिखित कार्य के अंतर्गत 'स्वरचना' और 'सृजनात्मक अभिव्यक्ति' को केंद्र बनाया जाए।
- पाठ के पीछे के अभ्यासों के साथ उन्हें पाठ आधारित कुछ अतिरिक्त प्रश्नों के उत्तर भी लिखवायें।
- सुंदर लिखावट के साथ-साथ भावों की मौलिकता और विषय की समझ पर अधिक ध्यान दिया जाए।
- गाइड या क्वश्चन बैंक का प्रयोग बिल्कुल न करें।

लिखित कार्यों का आकलन कैसे किया जाए?

इसके लिए पाँच अंक निर्धारित हैं। अंक प्रदान करने से पहले छात्र की स्वरचना की सुनिश्चितता करना आवश्यक है। छात्र का आकलन विषय की समझ, भावों की मौलिकता, वाक्य निर्माण क्रम, वर्तनी की शुद्धता के आधार पर किया जाए।

III. परियोजना कार्य

रचनात्मक आकलन का तीसरा अंश है- परियोजना कार्य। प्रत्येक रचनात्मक आकलन के लिए एक परियोजना कार्य करवाना अनिवार्य है। इस प्रकार प्रत्येक छात्र को कुल मिलाकर चार परियोजना कार्य करते हैं। परियोजना कार्य का मुख्य उद्देश्य जानकारी का संकलन या संग्रहण है। इससे पूर्व आयोजित किये गये रचनात्मक आकलन के अंश परियोजना कार्य के संबंध में निम्न तथ्य दृष्टिगत हुए-

1. पाठ के पीछे दिये गये परियोजना कार्य न देकर अन्य परियोजना कार्य सौंपे गये।
2. परियोजना कार्य में जानकारी के संकलन को महत्व नहीं दिया गया।
3. एक-एक विषय में ढेर सारी परियोजनाएँ दी गयीं।

4. परियोजनाओं का लेखन तो हुआ किंतु मौखिक प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ।
5. परियोजना लेखन की गुणवत्ता के आधार पर अंक प्रदान नहीं किये गये।
4. जानकारी के लिए बच्चों को इंटरनेट के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया गया।
5. सभी छात्रों का परियोजना कार्य एक जैसा था।

उपर्युक्त तथ्यों के परिणाम ये निकले-

- एक-एक छात्र को एक ही विषय के लिए कई परियोजनाएँ करनी पड़ी। इससे समय और धन का अपव्यय हुआ।
- छात्रों की मौखिक प्रस्तुतीकरण की क्षमता का ह्रास हुआ।
- वर्ष भर इंटरनेट पर छात्रों की भारी भीड़ दिखायी पड़ी।
- पुस्तकालय और संदर्भ पुस्तकों का प्रयोग न के बराबर हुआ।
- अभिभावकों में असंतोष व्याप्त हुआ क्योंकि बच्चे अधिकांश समय परियोजना कार्य में व्यस्त रहे।
- जानकारी के संकलन की अपेक्षा केवल अधिक चित्र चिपकाने वाले छात्रों को अधिक अंक मिले।
- परियोजना कार्य में विविधता का अभाव रहा।

उपर्युक्त समस्याओं के निवारण के कुछ उपाय-

- बच्चों को वर्ष में केवल चार परियोजना कार्य ही सौंपे जायें। एक रचनात्मक आकलन के समय यदि तीन पाठ पूरे होते हैं तो कक्षा में छात्रों के तीन समूह बनाये जाये और हर समूह को एक पाठ का परियोजना कार्य सौंपा जाय। इस प्रकार तीन पाठ की परियोजनाएँ भी होगी और प्रत्येक बच्चा एक रचनात्मक आकलन के लिए केवल एक ही परियोजना कार्य करेगा। इससे समय और धन दोनों की बचत होगी।
- परियोजना कार्य में जानकारी के संकलन को अधिक महत्व दिया जाय और बच्चों को इंटरनेट की अपेक्षा पुस्तकालय जाने के लिए और संदर्भ पुस्तकों द्वारा जानकारी इकट्ठी करने के लिए प्रेरित किया जाय।
- परियोजना में लिखित कार्य के साथ-साथ मौखिक प्रस्तुतीकरण पर भी बल दें और दोनों के आधार पर अंक प्रदान करें।
- परियोजना कार्य का आयोजन - परियोजना का विषय, समाचार स्रोत, उद्देश्य, परियोजना लेखन, निष्कर्ष या सीख, मौखिक प्रस्तुतीकरण के आधार पर किया जाय।
- अध्यापकों को चाहिए कि परियोजना के समय का निर्धारण करें। जिस छात्र को जो परियोजना दी गयी वह अध्यापक के पास दर्ज हो।

परियोजना कार्य - नमूना

प्रश्न :- वर्षा, बादल, नदी, सागर, सूरज, चाँद, झरने आदि में से किसी एक विषय पर प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए।

(I) विषय : नदी या सरिता

(II) स्रोत : पुस्तकालय, प्रकृति वर्णन संबंधित पुस्तक से संग्रहित कविता।

(III) उद्देश्य : प्रकृति वर्णन,

(IV) कविता लेखन या मुख्य परियोजना : 'सरिता'

कविः- विनोद चंद्र पांडेय 'विनोद'

कल-कल छल-छल कहती सरिता।
निर्भय होकर बहती सरिता।।
गर्मी सर्दी सहती सरिता।
आगे बढ़ती रहती सरिता।।

पर्वत पर से आती सरिता।
मैदानों को जाती सरिता।।
कैसी दौड़ लगाती सरिता।
छिपती फिर दिखलाती सरिता।।

प्यारी चतुर सयानी सरिता।
सबसे बढ़कर प्यारी सरिता।।
देती सबको पानी सरिता।
करती है मनमानी सरिता।।

हरी बनाती धरती सरिता।
वन में मंगल करती सरिता।।
दुनिया का दुख हरती सरिता।
मोद सभी में भरती सरिता।।

(V) निष्कर्ष या सीख : सरिता (नदी) प्रकृति की एक अनुपम देन है। सरिता हमें जल देती है। जल ही जीवन है। इसके अभाव में हम जीवित नहीं रह सकते हैं। इसीलिए हमें प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ जल संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए।

(VI) प्रस्तुतीकरण : (दिनांक.....) को मैंने कक्षा के समक्ष 'सरिता' कविता का मौखिक प्रस्तुतीकरण किया।

नोटः- (परियोजना कार्य का कक्षा में मौखिक प्रस्तुतीकरण करने पर ही प्रस्तुतीकरण के अंक दिये जायें।)

SCERT TELANGANA

इस प्रकार उपर्युक्त अंशों के आधार पर परियोजना कार्य का आयोजन करना चाहिए। इसके अंक इस आधार पर प्रदान करें-

(I) विषय विवरण, स्रोत और उद्देश्य के लिए	- 1
(II) परियोजना लेखन के लिए	- 2
(III) मौखिक प्रस्तुतीकरण के लिए	- 2
कुल	**5**

IV. पर्ची या लघु परीक्षा

रचनात्मक आकलन का चौथा अंश है- पर्ची या लघु परीक्षा। यह एक अनौपचारिक रूप से ली जाने वाली परीक्षा है जिसके लिए किसी भी प्रकार की समय-सारिणी की आवश्यकता नहीं होती है। इस परीक्षा का मुख्य आधार निरंतर रूप से शैक्षिक मापदंडों की जाँच है। एक रचनात्मक आकलन के लिए 20 अंकों की एक लघु परीक्षा आयोजित करना आवश्यक है। एक कालांश में यदि 20 अंकों की परीक्षा का आयोजन संभव नहीं होता है तो इसे 10-10 अंकों में भी विभाजित किया जा सकता है। इनको 10-10 जोड़ने पर, हर एक 20 अंक की परीक्षा में सभी शैक्षिक मापदंडों की जाँच अनिवार्य है। 20 अंकों में स्वरचना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रश्नों को अधिक भार प्रदान किया जाना चाहिए।

इससे पहले रचनात्मक आकलन के अंतर्गत जो लघु परीक्षाएँ आयोजित की गयी उनमें निम्न तथ्य दृष्टिगत हुए-

1. परीक्षा का आयोजन औपचारिक ढंग से हुआ। निश्चित समय में समय-सारिणी के अनुसार परीक्षाएँ ली गयीं।
2. ये परीक्षाएँ सतत समग्र मूल्यांकन की अवधारणा में बहुत पीछे रहीं।
3. परीक्षाओं में केवल बहुविकल्पीय प्रश्नों पर ही जोर दिया गया।
4. स्वरचना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति पर परीक्षा नहीं ली गयी।
5. यदि कहीं इसका आयोजन हुआ भी तो सभी छात्रों के उत्तरों में एकरूपता पायी गयी।

लघु परीक्षा के इस प्रकार के आयोजन के परिणाम ये निकले-

- छात्रों का सतत और समग्र मूल्यांकन नहीं हो सका।
- उनकी किसी एक ही क्षमता का आकलन हुआ।
- छात्रों की स्व लेखन क्षमता का विकास अवरुद्ध हुआ।
- छात्रों को पब्लिक परीक्षा में स्वरचना के प्रश्न हल करने में कठिनाई हुई।

लघु परीक्षा का आयोजन सही ढंग से हो, इसके लिए बीस अंकों में सभी शैक्षिक मापदंडों का समावेश करें।

SCERT TELANGANA

जैसेः- (I) पठित या अपठित गद्यांश या पद्यांश - 5 अंक

(II) स्वरचना - 6 अंक

(III) सृजनात्मक अभिव्यक्ति - 4 अंक

(IV) व्याकरण - 5 अंक

कुल 20 अंक

- परीक्षा में स्वरचना और सृजनात्मक अभिव्यक्ति आकलन निम्न आधार पर करें। जैसेः-

(I) विषयवस्तु की समझ

(II) भावों की मौलिकता

(III) वाक्य-निर्माण क्रम

(IV) वर्तनी की शुद्धता

लघु परीक्षा प्रश्न-पत्र - नमूना

(I) निम्न लिखित पद्यांश पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

संकटों से वीर घबराते नहीं
आपदाएँ देख छिप जाते नहीं
लग गए जिस काम में, पूरा किया
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता,
कर्मवीरों को न इससे वास्ता।

प्रश्नः- 1. कैसे व्यक्ति मुसीबतों से पीछे नहीं हटते हैं?

2. आपदाएँ आने पर वे क्या करते हैं?

3. रास्ता कैसा है?

4. 'गिरि' का अर्थ क्या है?

5. पद्यांश में एक ही पंक्ति में आये विलोमार्थी शब्द क्या हैं?

स्वरचना

(II) निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच से आठ वाक्यों में लिखिए।

प्रश्नः- 1. 'वर्षा ऋतु' के समय प्रकृति की सुंदरता के बारे में अपने शब्दों में लिखिए।

2. 'भ्रूण हत्या' जैसी सामाजिक विषमता की समाप्ति क्यों आवश्यक है?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

(III) मेले में आपके और दुकानदार के बीच होने वाली बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

भाषा की बात

(IV) सूचना के अनुसार लिखिए।

SCERT TELANGANA

1. 'मेघ' का समानार्थी लिखिए।
2. 'वारि' के पर्यायवाची लिखिए।
3. अमीना .....माथे.....हाथ रखा। 'कारक' चिह्नों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
4. 'मोती और सीपी' - समास पहचानिए।
5. 'विद्यालय' - संधि पहचानिए।

सारांशात्मक आकलन

भार तालिका

Blue Print VI (Second Language)

	शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	अंक	भागवार अंक
I	पढ़ो (40 अंक)	4 प्रश्न 1,2,3,4 2 प्रश्न 5,6	4 x 5 = 20 2 x 10 = 20	40
II	लिखो (40 अंक)	3 प्रश्न 7,8,9	3 x 10 = 30	30
III	सृजनात्मक अभिव्यक्ति (10 अंक)	1 प्रश्न 10	1 x 10 = 10	10
		10 प्रश्न		80

SCERT TELANGANA

Blue Print VII, VIII (Second Language)

	शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	स्त्रोत	अंक	भागवार अंक
I	Part-A पढ़ो (20 अंक)	1(1-5) 2(6-10) 3(11-15) 4(16-20)	पठित गद्यांश (उपवाचक) अपठित गद्यांश पठित पद्यांश - आधुनिक कविता अपठित पद्यांश - आधुनिक कविता	5 x 1 = 5 5 x 1 = 5 5 x 1 = 5 5 x 1 = 5	20
II	(स्वरचना) (30 अंक)	लघु प्रश्न 4 प्रश्न (21-24) निबंध प्रश्न (25-28)	पद्य से और गद्य से दो प्रश्न दिये जायेंगे। पद्य में से दो और गद्य भाग से दो प्रश्न दिये जायेंगे। प्रत्येक दो में से एक प्रश्न का उत्तर लिखना होगा।	4 x 3 = 12 2 x 7 = 14	30
III	सृजनात्मक अभिव्यक्ति (10 अंक)	3 प्रश्न (29-31)	किन्हीं तीन विधाओं के संबंधित प्रश्न दिये जायेंगे। इनमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होगें।	2 x 5 = 10	10
IV	Part-B भाषा की बात (20 अंक)	20 प्रश्न (बहुविकल्पीय प्रश्न)	शब्दभंडार और व्याकरणांश से संबंधित प्रश्न दिये जायेंगे।	20 x 1 = 20	20
			कुल		80

SCERT TELANGANA

Blue Print IX, X (Second Language)

	शैक्षिक मापदंड	प्रश्न संख्या	स्त्रोत	अंक	भागवार अंक
I	Part-A अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया (20 अंक)	1(1-5) 2(6-10) 3(11-15) 4(16-20)	पठित गद्यांश (उपवाचक) अपठित गद्यांश पठित पद्यांश - आधुनिक कविता अपठित पद्यांश - आधुनिक कविता	5 x 1 = 5 5 x 1 = 5 5 x 1 = 5 5 x 1 = 5	20
II	अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता (40 अंक) (40 अंक) सृजनात्मक	लघु प्रश्न 4 प्रश्न (21-24) निबंधात्मक प्रश्न 4 प्रश्न (25-28) 3 प्रश्न (29-31)	स्वरचना के प्रश्न। दो प्रश्न गद्य भाग, दो प्रश्न पद्य भाग से दिये जायेंगे। चार में से एक प्रश्न कवि/लेखक परिचय से संबंधित होगा। स्वरचना के प्रश्न। दो प्रश्न गद्य भाग, दो प्रश्न पद्य भाग से दिये जायेंगे। प्रत्येक दो में से एक प्रश्न का उत्तर लिखना होगा। किन्हीं तीन विधाओं से संबंधित प्रश्न दिये जायेंगे। इनमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे।	4 x 4 = 16 2 x 7 = 14 2 x 5 = 10	40
III	Part-B भाषा की बात (20 अंक)	बहुविकल्पीय प्रश्न) 20 प्रश्न (1-20 bits)	शब्दभंडार और व्याकरणांश से संबंधित प्रश्न दिये जायेंगे।	20 x 1 = 20	20
			कुल		80

SCERT TELANGANA

विशेष मुद्दे

SCERT TELANGANA

प्रश्नोत्तर द्वारा बाल लैंगिक उत्पीड़न पर संवेदीकरण

बाल सुरक्षा और विद्यालयों की भूमिका

1.1 विद्यालयों में बाल सुरक्षा योजना क्यों होनी चाहिए?

यह समझना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि बाल अधिकारों और बाल सुरक्षा से संबंधित पारिस्थितिक तंत्र अधिकाधिक समग्र और बाल केंद्रित हो गया है। बालकों से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति बाल सुरक्षा आवश्यकताओं के दायरे में आता है।

घर के अतिरिक्त, विद्यालय ही ऐसा स्थान है जहाँ बालक सुरक्षित और प्रसन्न रहते हैं। इसीलिए प्रत्येक विद्यालय में बाल सुरक्षा योजना होनी चाहिए।

1.2 संवैधानिक और वैध प्रावधान

भारत के संविधान के अनुच्छेद इक्कीस, में जीवन और गरिमा की सुरक्षा के साथ-साथ चौदह वर्ष की आयु तक के बच्चों की शिक्षा का अधिकार भी शामिल है।

शारीरिक दंड आरटीई का उल्लंघन है:- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में स्प्ष्ट रूप से दर्शाया गया है कि शिक्षा भय और भेदभाव से मुक्त होनी चाहिए।

प्रतिकूल परिस्थितियों और अदृश्य भय के कारण बच्चों की मानसिक शांति बाधित होती है, जिसका प्रभाव उनकी अधिगम क्षमता पर पड़ता है। बालकों की सुरक्षा, उनकी भलाई, उनका सर्वांगीण विकास तथा शिक्षा के अधिकार की उपलब्धि सभी एक-दूसरे से जुड़े हैं। शारीरिक दंड से बालकों की शिक्षा के अधिकारों का हनन होता है। क्योंकि वे दंड के भय से विद्यालय नहीं जाना चाहते हैं या फिर पूर्ण रूप से विद्यालय जाना छोड़ देते हैं। इसीलिए, शारीरिक दंड पूर्णरूप से जीवन और गरिमा की सुरक्षा का उल्लंघन है।

1.3 बाल अधिकारों पर संस्थागत प्रतिबद्धता

यू. एन. सी. आर. सी. का अनुच्छेद 19:

माता-पिता, वैध संरक्षक या बालक की देखभाल करने वाले अन्य व्यक्ति की देखरेख में बालकों के प्रति होने वाली सभी प्रकार की शारीरिक और मानसिक हिंसा, उत्पीड़न, उपेक्षा, दुर्व्यवहार, शोषण तथा लैंगिक प्रताड़ना के लिए राज्य दलों को बालकों की सुरक्षा के लिए समुचित वैधानिक, प्रशासकीय सामाजिक और शैक्षिक मापदंड अपनाने चाहिए। यू. एन. सी. आर. सी. ने यह भी बताया है कि सभी प्रकार के उत्पीड़न और उपेक्षा से सुरक्षा, बालक का अधिकार है।

बालकों की सुरक्षा उनकी शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि वे अपने रचनात्मक आयु के बारह वर्ष विद्यालय में व्यतीत करते हैं। बालक और उसके परिवार से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति को बालकों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

1.4 शैक्षिक उत्तरदायित्वता और बाल अधिकारों पर आर. टी. ई. अधिनियम – 2009 के प्रावधान

आर. टी. ई. अधिनियम, 2009 का अनुच्छेद 29 का अनुबंध :

खंड (1) के अंतर्गत, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन प्रक्रियाओं का निर्माण करनेवाली शैक्षिक प्राधिकारिता को निम्न स्तरों पर ध्यान देना चाहिए –

- संविधान में उल्लेखित मूल्यों की सुनिश्चितता
- बालकों का सर्वांगीण विकास
- बालकों के ज्ञान, क्षमता और प्रतिभा का विकास
- बालकों की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास
- क्रियाकलापों, खोज व अन्वेषण, बाल मित्रता तथा बाल केंद्रित तरीके से अधिगम
- शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक हो सके, बालक की मातृभाषा हो

- बालकों को भयमुक्त और तनावमुक्त वातावरण उपलब्ध कराना, उन्हें अपने विचारों को प्रकट करनी की स्वतंत्रता देना
- बालक के ज्ञान और अवबोध तथा दैनिक जीवन में इसके प्रयोग की क्षमता का सतत् और समग्र मूल्यांकन

इन धाराओं में निहित अंश ऐसे विद्यालयी संस्कारों पर बल देते हैं जो बालकों को भय और तनाव से मुक्त करते हैं तथा बालकों की सुरक्षा और भलाई को बढ़ावा देते हैं।

2. लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो अधिनियम, 2012) के अनुसार बाल लैंगिक उत्पीड़न का तात्पर्य क्या है?

बाल लैंगिक उत्पीड़न का अर्थ बालकों को निम्नलिखित में किसी एक ऐसे लैंगिक क्रियाकलाप में शामिल करना है-

- जिसे बालक समझ नहीं पाता है।
- जिस पर बालक अपनी सहमति नहीं दे पाता है।
- जिसके लिए बालक मानसिक रूप से तैयार नहीं होता है और सहमति नहीं देता है तथा
- ऐसा क्रियाकलाप जो समाज के नियमों और सामाजिक मानकों का उल्लंघन करता है।

किसी वयस्क, अपने से किसी बड़ी उम्र के व्यक्ति, या अधिक ज्ञानात्मक बालक द्वारा स्वयं के लैंगिक आनंद के लिए बालक का उपयोग करना ही बाल लैंगिक उत्पीड़न है। यह शारीरिक, मौखिक और संवेगात्मक हो सकता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाएँ शामिल होती हैं-

- वस्त्रों से ढके या निर्वस्त्र शरीर के किसी भी भाग का स्पर्श
- प्रवेशन मैथुन, मुख मैथुन
- बालक को लैंगिक क्रियाकलाप के लिए उकसाना जिसमें हस्तमैथुन भी शामिल हो

SCERT TELANGANA

- जानबूझकर बालक के समक्ष लैंगिक गतिविधियों में लिप्त होना
- बच्चों को अश्लील दृश्य दिखाना या बच्चों से अश्लील दृश्य दिखवाना या बच्चों से अश्लील दृश्यों के चित्र बनवाना
- किसी वयस्क द्वारा बच्चों के सामने अपनी शरीर के निजी भागों का प्रदर्शन करना (प्रदर्शनवाद)
- वेश्यावृत्ति के लिए बालक को उकसाना
- बालक से लैंगिक वार्तालाप करना

3. एक अध्यापक यह सोच सकता है कि :

(अ) मेरा दायित्व बाल सुरक्षा नहीं बल्कि शिक्षा है

(आ) लैंगिक उत्पीड़न मेरे विद्यालय में नहीं है

(इ) मुझे सी. एस. ए. और उससे संबंधित नियमों और अधिनियमों को क्यों जानना चाहिए?

किसी भी प्रकार के उत्पीड़न खतरे या दुर्व्यवहार की रिपोर्ट देना तथा अपनी कक्षा को भय, सदमे और चिंता से मुक्त रखना प्रत्येक शिक्षक का वैध और अनिवार्य दायित्व है। भूख और अस्वस्थता के समान ही, खतरे और नुकसान भी बालक के अधिगम में बाधा उत्पन्न करते हैं। विद्यालय के कर्मचारीगण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि वे मामलों की पहचान कर, बच्चों की तुरंत मदद कर सकते हैं।

विद्यालय और उसके कर्मचारियों को ऐच्छिक तौर पर समाज सेवकों, पुलिसकर्मियों तथा वैध और स्वास्थ्य सेवा सेवकों के साथ मिलकर, एक सुरक्षा तंत्र का निर्माण कर बालकों की सुरक्षा और कल्याण के लिए काम करना चाहिए।

यदि विद्यालय के किसी कर्मचारी को अपने परिचित बच्चे के उत्पीड़न और उसकी उपेक्षा का पता चलता है या उसे उसके उत्पीड़न की आशंका होती है तो उसे तुरंत इसकी सूचना पदासीन प्राधिकारिता को देनी चाहिए।

पॉक्सो अधिनियम के अनुच्छेद इक्कीस (एक) के बाल लैंगिक उत्पीड़न से

SCERT TELANGANA

संबंधित मामलों कानूनी कार्यान्वयन प्राधिकारिता को देना अनिवार्य है। यह नियम माता-पिता, चिकित्सकों और विद्यालय के कर्मचारियों सहित सभी पर लागू होता है। बाल उत्पीड़न के संदेह की सूचना न देना अधिनियम के अनुसार एक अपराध है। कानून यह स्पष्ट करता है कि यह सामायिक या गोपनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी पर तुरंत कार्यवाही होनी चाहिए।

4. ''यदि मैं ऐसे विषयों की सूचना दूँगा तो मैं परेशानियों से पूर्ण प्रक्रियाओं में फंस जाऊँगा।'' क्या यह सही है?

'प्रकटीकरण' की क्रिया में आप अकेले नहीं है। यदि आपको बालक के क्षतिग्रस्त होने या उसके क्षतिग्रस्त होने की आशंका हो तो एक शिक्षक के रूप में आपको इसकी सूचना संबंधित प्राधिकारिता को अवश्य देनी चाहिए।

बालक के द्वारा प्रकटीकरण करते समय आपको अपने विद्यालय में कुछ रिपोर्टिंग नियमों का पालन करना चाहिए। ये नियम निम्नलिखित हैं-

बालक की बात सुनें, उसे आश्वासन दे कि प्रकटीकरण करना अच्छी बात है और वह सुरक्षित है।

गोपनीयता की शपथ न लें किंतु बालक को आदरपूर्वक समझायें कि यह सुरक्षा के लिए आवश्यक है और यह केवल उन्हीं के लिए जिनके लिए यह जानकारी आवश्यक है।

- विद्यालय के प्रमुख या पदासीन व्यक्ति, हेल्पलाईन या पुलिस को सूचना दें।
- पूरी बातचीत और कार्यवाही का रिकार्ड रखें। देर न करें।
- खोज न करें। आपका काम बालकों की सुरक्षा करने वाले कर्मियों को सूचित करना है।

SCERT TELANGANA

5. विद्यालय प्रधानाध्यापक के रूप में मैं अपने विद्यालय में सुरक्षात्मक वातावरण का निर्माण किस प्रकार कर सकता हूँ?

5.1 मूलभूत निम्नतम आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं–

- विद्यालय में स्पष्ट रिपोर्टिंग और प्रतिक्रिया से बद्ध बाल सुरक्षा योजना की सुनिश्चितता कर लें।
- बाल सुरक्षा नियमों, संबंधित दिशा निर्देशों तथा बाल सुरक्षा परामर्श एजेंसियों की जानकारी प्राप्त कर लें।
- छात्रों और अभिभावकों को सुरक्षा नियमों और विद्यालय की नीतियों की जानकारी दें। स्कूल मैनेजमेंट कमिटि (विद्यालय प्रबंधन समिति) के सदस्यों को भी इनकी जानकारी होनी चाहिए।
- विद्यालय में ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जहाँ बालक स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें। उसे लगे कि कोई उनकी बात सुनने वाला है। विद्यालय में वैयक्तिक और भावात्मक अधिगम, व्यवहार संबंधी कार्यक्रम, सहभागी गतिविधियाँ करवायें। छात्र फोरमों का निर्माण करें। क्योंकि इन कार्यक्रमों में छात्रों में आत्मविश्वास और भरोसे जैसे भावों का विकास होता है।
- निजी सुरक्षा पर नियमित रूप से सभी छात्रों के लिए सत्रों का आयोजन करें। लैंगिक उत्पीड़न का पता चलने पर खोज न करें। उसकी तुरंत रिपोर्ट करें। खोज की रिपोर्टिंग महत्वपूर्ण होती है।
- संरचनात्मक सुरक्षा, विद्यालय परिसर की स्वच्छता, कक्षा-कक्षों, शौचालयों, मध्याह्न भोजन के स्थानों की स्वच्छता का ध्यान रखना भी विद्यालयी सुरक्षा का ही एक भाग है।

5.2 बाल उत्पीड़न के मामलों की रिपोर्ट कैसे करना चाहिए?

पॉक्सो अधिनियम के अंतर्गत मामलों की रिपोर्टिंग तथा बालक के बयान को दर्ज करने की प्रक्रिया। कौन रिपोर्ट दे सकता है?

SCERT TELANGANA

किसी भी व्यक्ति को (बालक सहित) यदि यह आभास होता है कि अपराध होने वाला है या उसे अपराध होने का पता चलता है तो पॉक्सो अधिनियम के अंतर्गत उसका यह अनिवार्य कर्त्तव्य (यह नियम बालक पर तत्पर नहीं होता है) बन जाता है कि वह इस मामले की तुरंत रिपोर्ट करें। मीडियाकर्मियों, होटलों, लॉज, अस्पताल, क्लबों, स्टूडियो और फोटोग्राफी सुविधाएँ प्रदान करने वाले कर्मियों का भी यह कर्त्तव्य होता है कि यदि वे बालक के लैंगिक उत्पीड़न से संबंधित सामग्री या वस्तुओं के संपर्क में आते हैं तो इनके बारे में तुरंत सूचना दें। रिपोर्ट देने में असफल होने पर उन्हें छह मास तक के कारावास या जुर्माने की या दोनों की सज़ा हो सकती है। बालक को यह दंड नहीं दिया जा सकता है।

5.3 मामले या घटना की रिपोर्ट किसे दी जानी चाहिए?

मामले या घटना की रिपोर्ट विशेष किशोर पुलिस यूनिट (एस. जे. पी. यू.) या स्थानीय पुलिस को दी जानी चाहिए। पुलिस या एस. जे. पी. यू. को चाहिए कि इस रिपोर्ट को लिखित रूप में दर्ज करें, रिपोर्ट की प्रविष्टि संख्या दें, निरीक्षण के लिए रिपोर्ट को पढ़ें और पुस्तिका में इसे दर्ज करें। एफ. आई. आर. दर्ज करें और इसकी एक प्रति सूचना देने वाले को दें। रिपोर्ट की भाषा सरल होनी चाहिए, ताकि जो रिकार्ड किया गया है वह बालक समझ में आ जाय। यदि यह ऐसी भाषा में रिकार्ड किया गया है जिसे बालक न समझ सके तो बालक को योग्य अनुवादक या दुभाषिया उपलब्ध करवाया जाए।

6. 2018 में पॉक्सो अधिनियम या नियमों में क्या संशोधन किये गये?

- अध्यादेश भारतीय पैनल कोड के अनुच्छेद 316 में संशोधन को प्रस्तावित करता है। संशोधित प्रावधान रेप की निम्नतम सज़ा 7 से 10 वर्ष करने को प्रस्तावित करता है।
- अध्यादेश अनुच्छेद 376 (3) को सम्मिलित करने के लिए प्रस्तावित करता है, जो 16 वर्ष की कम आयु की लड़की से बलात्कार होने पर

बीस वर्ष की सज़ा होगी और जो बढ़कर आजीवन भी हो सकती है।

- अनुच्छेद 376 एबी सान्निविष्ट करने के लिए प्रस्तावित करता है कि 12 वर्ष से कम आयु की लड़की के साथ बलात्कार करने वाले को जीवनपर्यंत कारावास या मृत्युदंड की सज़ा देने को प्रस्तावित करता है।
- अध्यादेश 16 वर्ष से कम आयु की महिला के साथ सामूहिक बलात्कार करने वालों को जीवनपर्यंत कठोर कारावास और जुर्माने की सज़ा को प्रस्तावित करता है।
- अध्यादेश 12 वर्ष से कम आयु की लड़की के साथ बलात्कार करने वाले को जीवनपर्यंत कारावास या मृत्युदंड की सज़ा देने को प्रस्तावित करता है।
- अनुच्छेद अध्यादेश

> प्रत्येक क्षण मायने रखता है, प्रत्येक बालक मायने रखता है, प्रत्येक बचपन मायने रखता है। – कैलाश सत्यार्थी

7. बालक का शरीर और वैयक्तिक सुरक्षा

7.1 अध्यापक की भूमिका

- अध्यापक यह सुनिश्चित करें कि माता-पिता बच्चों को 3 से 5 वर्ष की आयु के मध्य ही शरीर की सुरक्षा के बारे में शिक्षित करना आरंभ कर दें।
- बच्चों को शरीर के गुप्तांगों सहित सभी अंगों नाम ठीक-ठीक नाम सिखायें।
- यदि माता-पिता या प्रशिक्षक को भाषा या शब्द असुविधाजनक लगे तो वे सुसु की जगह या पॉटी की जगह जैसे बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर सकते हैं, विशेषतः उस समय जब बालक छोटा हो। जब बालक बड़ा हो जाता है तब उन्हें समुचित शब्दों को सिखाया जा सकता है। किंतु गुप्तांगों के संदर्भ में उपयोग में लाये जाने वाले शब्द ऐसे हों कि वे स्पष्ट रूप से समझे जा सकें और उन्हें किसी प्रकार की

SCERT TELANGANA

शर्म महसूस न हो या अपशब्दों जैसेः- फ्लॉवर, पैरट, शेम-शेम, छी-छी आदि का उपयोग न हो।

- उन्हें यह सिखाइए कि किसी के लिए भी उनकी गुप्तता या सीमाओं का उल्लंघन करना ठीक नहीं है।
- उन्हें समझाइए कि दूसरों के द्वारा उनके गुप्तांगों को देखना या छूना सही नहीं है। उन्हें समझाइए कि ये भाग गुप्त हैं और इसे गुप्त ही रखना चाहिए।
- अपने बालक को यह बताइए कि 'NO' कहना सही है। बालक को किसी से गले लगाने या चुंबन देने के लिए जबरदस्ती न करे। यदि वे किसी के साथ यह नहीं करना चाहते हैं तो उनके इस अधिकार का सम्मान कीजिए।
- बालक को यह जानकारी दीजिए कि यदि कोई उनके गुप्तांगों को देखना या छूता है तो वे संभवतः तुरंत माता-पिता को यह बात बतायें। उन्हें आश्वासन दीजिए कि आप उनकी बात सुनेंगे, उनका विश्वास करेंगे और उन्हें सुरक्षित रखेंगे।
- उन्हें पुनः आश्वासन दीजिए कि अधिकतर 'टच' सही होते हैं, किंतु यदि वे कोई 'टच' सही होते हैं, किंतु यदि वे कोई 'टच' से असमंजस होते हैं या जिससे उन्हें भय होता है तो वे 'NO' कह सकते हैं और उसके बारे में माता-पिता को बताना आवश्यक है।

7.2 बालकों को शारीरिक सुरक्षा के तीन नियम सिखायें

I. व्यक्तिगत शारीरिक सुरक्षा नियमों का पालन करता हूँ।

नियम एक : कपड़े पहनने का नियम - मैं अपने गुप्तांगों को दूसरों के समक्ष ढककर रखता हूँ या रखती हूँ। यद्यपि हम अपना मुँह ढककर नहीं रखते हैं, जब कि वह भी निजी है।

नियम दो : छूने के नियम - दूसरों के सामने मैं आपसे निजी अंगों को नहीं छूता हूँ।

नियम तीन : बात करने का नियम – मैं सुरक्षित वयस्क से ही अपने निजी अंगों के बारे में बात करता हूँ या करती हूँ। मैं उनसे ही इन अंगों से संबंधित विषयों पर प्रश्न पूछता हूँ या पूछती हूँ और चर्चा करता हूँ या करती हूँ।

एक सुरक्षित व्यक्ति स्वयं के लिए और दूसरों के लिए शारीरिक सुरक्षा नियमों का पालन करता है। मैं एक सुरक्षित व्यक्ति हूँ। मैं इन नियमों का पालन करता हूँ और मैं दूसरों को असुरक्षित तरीके से न तो छूता हूँ और न ही बात करता हूँ।

यदि कोई निजी शारीरिक सुरक्षा नियमों को तोड़ता है तो, मैं –

उस व्यक्ति को **'नहीं'** कह सकता हूँ।

हमें उस व्यक्ति को दूर **'भाग जाना'** चाहिए। यदि फोन पर बात करते समय ऐसा हो रहा है तो हमें फोन बंद कर देना चाहिए।

किसी सुरक्षित वयस्क को इस व्यक्ति के बारे में **'बताना'** चाहिए क्योंकि यह पुरुष या महिला कुछ असुरक्षित करना

यदि मुझे कोई समस्या है या मेरी सुरक्षा को क्षति पहुँचती है तो मैं सहायता के लिए 1098 को कॉल कर सकता हूँ या सकती हूँ।

7.3 लैंगिक उत्पीड़न के प्रभाव या मार्गदर्शक

जिन बालकों पर लैंगिक उत्पीड़न हुआ है, या हो रहा है वे पहचानदायक शारीरिक और व्यावहारिक चिह्न दिखाते हैं।

- आक्रमण, विरोधी और अवज्ञाकारी व्यवहार
- स्वयं या दूसरों के लिए खतरा बनना
- विद्यालय या घर जल्दी आना या विद्यालय से नहीं जाना चाहते। विद्यालय या घर जाने के लिए भयभीत होना
- पढ़ाई में पिछड़ जाना (सीखने के लिए बच्चों को उग्र ऊर्जा को सीखने में बदलना चाहिए, किंतु द्वंद्व में रहने वाले बच्चे ऐसा नहीं कर सकते हैं।)
- सहपाठियों के साथ अच्छे संबंध बनाने में असमर्थ
- पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़े पहनना। गर्मी के महीनों में ऐसे कपड़े उचित नहीं होते हैं। (ध्यान रहे कि यह एक सांस्कृतिक मुद्दा भी हो सकता है।)
- प्रत्यावर्ती या अल्प परिपक्व व्यवहार दर्शाना
- शारीरिक संबंध पसंद न करना या सिकुड़ना (शारीरिक प्रशंसा जैसे- पीठ थपथपाने को सहन नहीं कर पाना।)
- अत्यधिक रोना
- चिड़चिड़ेपन और क्रोधावेश में वृद्धि
- किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु से भयभीत होना
- बिस्तर या पैंट गीला करना
- गुप्तांग या जननेंद्रियों में असहनीय पीड़ा, सूजन, रक्तस्राव या खुजली होना
- लैंगिक संचारित संक्रमण (छाले, स्राव, जननेंद्रियों में खुजली)
- चलने में बेहद कठिनाई
- सिरदर्द और पेटदर्द में वृद्धि

8. जागो! बदलो!! बोलो!!!

पुलिस, विद्यालय शिक्षा, स्वास्थ्य व चिकित्सा, महिला और बाल कल्याण आदि विभागों से सेक्टर में कार्यरत एनजीओ'स के साथ मिलकर अक्तूबर, 2017 में **"जागो! बदलो!! बोलो!!!"** अभियान आरंभ किया।

बाल सुरक्षा और बचाव हमारी चिंता है।

चलिए, पाठशालाओं को 'लर्निंग हब' में ढालें जहाँ बच्चे आनंदमय और सुरक्षित बचपन व्यतीत कर सकें।

इससे अधिक पवित्र कोई भरोसा नहीं है कि बच्चों से विश्व है। इससे यह सुनिश्चित करने से अधिक महत्वपूर्ण कोई कर्त्तव्य नहीं है कि उनके अधिकारों का आदर हो, कि उनकी कुशलता सुरक्षित हो, कि उनकी जिंदगी भय और अभाव से मुक्त हो और यह कि वे शांतिपूर्ण वातावरण में विकसित हो सकें।

– कोफ़ी अन्नन

SCERT TELANGANA

CCI's	चाइल्ड केर इन्सटिट्यूशन
CEDAW	दि कन्वेन्शन ऑन द एलिमिनेशन ऑफ डिसक्रिमीनेशन अगेन्स्ट वूमन
CPCR	कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट
Cr. PC	क्रिमिनल प्रोसिज़र कोड
CRIN	चाइल्ड राइट्स इन्फॉरमेशन नेटवर्क
CWC	चाइल्ड वेल्फेयर कमिटि
DCPU	डिसट्रिक्ट चाइल्ड प्रोटेक्शन यूनिट
DHR	डिपार्टमेंट ऑफ हेल्थ रिसर्च
FIR	फर्स्ट इन्फॉरमेशन रिपोर्ट
ICDS	इंटिग्रेटेड चाइल्ड प्रोटेक्शन स्कीम
IO	इन्वेस्टीगेशन ऑफीसर
IPC	इंडियन पैनल कोड
JJ Act	जुवेनाइल जस्टीस (केर अंड प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन) एक्ट
MIL	मेडिकल लीगल एक्ट
NCPCR	नेशनल कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स
NFHS	नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे
NGO	नॉन गवर्नमेंट ऑर्गनाइजेशन
OP3CRC	थर्ड ऑप्शनल प्रोटोकॉल टू द कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ द चाइल्ड ऑन अ कम्यूनिकेशन्स प्रोसीजर
OPs	ऑप्शनल प्रोटोकॉल्स
POCSO	लैंगिक अपराधों से बच्चों की सुरक्षा अधिनियम
PTSD	पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर
SCPCR	स्टेट कमीशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ चाइल्ड राइट्स
SJPU	स्पेशल जुवेनाइल पुलिस यूनिट

SCERT TELANGANA

UNCRC यूनाइटेड नेशन्स कन्वेन्शन ऑन द राइट्स ऑफ द चाइल्ड

UNICEF यूनाइटेड नेशन्स इंटरनेशनल चिल्ड्रन्स फंड

1992 में बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ने निम्नलिखित बाल अधिकार घोषित किये–

उत्तरजीविता का अधिकार :– इनके अंतर्गत पोषण, आश्रय, पर्याप्त जीवन स्तर और चिकित्सकीय सेवाओं की पहुँच जैसी जीवित रहने की आधारभूत आवश्यकताओं और बालक के जीवन के अधिकार को सम्मिलित किया।

विकास का अधिकार :– इनके अंतर्गत शिक्षा, खेल, अवकाश, सांस्कृतिक क्रियाकलापों, सूचना प्राप्ति तथा विचारों, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार सम्मिलित किये गये हैं।

सुरक्षा अधिकार :– यह शरणार्थी बच्चों की विशेष देखभाल के साथ-साथ सभी प्रकार के उत्पीड़न, उपेक्षा व शोषण के विरुद्ध बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चत करता है; आपराधिक न्याय प्रणाली में बच्चों के लिए सुरक्षा उपायों; रोजगार में बच्चों के लिए सुरक्षा; किसी भी प्रकार के उत्पीड़न या शोषण को भुगतने वाले बच्चों के लिए पुनर्वास को सुनिश्चित करता है।

सहभागिता का अधिकार :– राय व्यक्त करने, उनके निजी जीवन को प्रभावित करने वाले मुद्दों में बात करने, संगठनों में भाग लेने और शांतिपूर्ण ढंग से एकत्रित होने के बच्चों के अधिकार को सुरक्षित रखता है। जब उनकी क्षमता विकसित हो जाती है तब बच्चों को वयस्क बनने की तैयारी में समाज के क्रियाकलापों में भाग लेने के अधिक अवसर प्राप्त हो।

पूर्व परीक्षा

1. भाषा की पहली इकाई क्या है? ( )

   A. शब्द B. वाक्य C. वर्ण D. पद

2. अनुच्छेद पढ़कर एक वाक्य में लिखा जाने वाला उत्तर इस कौशल के अंतर्गत आता है? ( )

   A. सुनना-बोलना B. पढ़ना C. लिखना D. सृजनात्मक अभिव्यक्ति

3. कहानी का परिवर्तन संवाद रूप में करना- इस कौशल को दर्शाता है? ( )

   A. पढ़ना B. शब्द-भंडार C. प्रशंसा D. सृजनात्मक अभिव्यक्ति

4. अच्छी कक्षा मानी जाती है- ( )

   A. अध्यापक क्रियाशील हो। B. छात्र क्रियाशील हो।

   C. छात्र अधिक क्रियाशील हो। D. अध्यापक अधिक क्रियाशील हो।

5. कक्षाओं में सामूहिक क्रियाकलापों द्वारा निम्न लिखित में इसका अभाव होगा- ( )

   A. परस्पर सहयोग द्वारा सीखने का B. व्यक्तिगत प्रदर्शन का

   C. चर्चा द्वारा सीखने का D. सामीप्य की भावना का

6. शब्द भंडार के अंतर्गत नहीं आता- ( )

   A. मुहावरे का वाक्य प्रयोग B. कहानी आगे बढ़ाना

   C. पर्यायवाची शब्द चुनना D. विलोमार्थी शब्द लिखना

7. 'राजकुमार' शब्द किस समास से संबंधित है? ( )

   A. अव्ययीभाव B. द्वंद्व

   C. द्विगु D. तत्पुरु

8. छंद मुक्त कविता का उदाहरण है- ( )

   A. बरसते बादल B. माँ मुझे आने दे

   C. कण-कण का अधिकारी D. जिस देश में गंगा बहती है

9. सीखने की सर्वोत्तम विधि मानी गई है- ( )

   A. प्रयत्न व भूल द्वारा सीखने का सिद्धांत

   B. सूझ व अंतदृष्टि द्वारा सीखने का सिद्धांत

   C. संबद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धांत

   D. अभ्यास का सिद्धांत

10. हिंदी शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य है- ( )

   A. देशभक्ति का विकास करना B. नैतिक गुणों का विकास करना

   C. सीखने की संप्राप्तियों का विकास D. लेखन का विकास करना

11. अपने जीवन की कोई अविस्मरणीय घटना लिखिए।

SCERT TELANGANA

पूरक परीक्षा

1. भाषा का विकास होता है- ( )
   A. द्विमुखी प्रक्रिया से B. त्रिमुखी प्रक्रिया से
   C. बहुमुखी प्रक्रिया से D. चहुँमुखी प्रक्रिया से
2. सीखने की संप्राप्तियाँ सुनिश्चित करने का उद्देश्य है- ( )
   A. स्तरानुसार भाषार्जन के मानदंड निर्धारित करना
   B. विषयानुसार भाषार्जन के मानदंड निर्धारित करना
   C. कक्षा को क्रियाशील बनाना
   D. अध्यापक को क्रियाशील बनाना
3. चर्चा, वाद-विवाद किस कौशल के विकास के साधन हैं- ( )
   A. पढ़ो B. सुनो-बोलो C. लिखो D. सृजनात्मक अभिव्यक्ति
4. यह पढ़ना कौशल सिखाने का साधन नहीं है- ( )
   A. वाक्यों को क्रम देना B. जोड़ी बनाना
   C. बहुविकल्पीय प्रश्न D. चर्चा करना
5. नौंवी कक्षा के स्तर पर लिखना है- ( )
   A. शब्दों को सुनकर श्रुतलेख B. अनुलेख C. प्रतिलेख D. स्वलेख
6. सृजनात्मक प्रश्न का संबंध इससे है- ( )
   A. पढ़ना B. बातचीत करना C. विधा D. सूझ
7. प्रशंसा कौशल का उद्देश्य है- ( )
   A. पाठ की नीति के महत्व से अवगत कराना। B. तालियाँ बजाना
   C. विधा परिवर्तन करना D. अभिनय करवाना
8. शब्द निर्माण की विधि है- ( )
   A. पर्याय शब्द B. भिन्नार्थक शब्द C. संधि शब्द D. विलोम शब्द
9. रूप परिवर्तन का उदाहरण है- ( )
   A. यह B. तुम C. उसने D. वह
10. हिंदी पुस्तक का निर्माण किया जा रहा है। रेखांकित शब्द का लिंग पहचानिए-( )
   A. स्त्रीलिंग पुल्लिंग B. पुल्लिंग
   C. नपुंसक लिंग D. ये सभी
11. प्रशिक्षण में क्या सीखा? सौ शब्दों में लिखिए।

SCERT TELANGANA